ନାଗରୀକ नागरिक NAGRIK

अंक — 4 | अवधि—वार्षिक | वर्ष 2018

फोटो : भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

फोटो : www.outlookindia.com

राजभाषा विभाग. गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अध्यक्षीय कार्यालय : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर

महालेखाकार के कार्यालय से प्राप्त पुरस्कार की राशि का वितरण

संपादक मंडल के सदस्यगण

संपादक

डॉ. रविन्द्र कुमार दुबे
स्नातोकत्तर शिक्षक (हिंदी)
के.वि.-1 भुवनेश्वर

श्रीमती प्रनिती सुबोधी
स्नातोकत्तर शिक्षक (हिंदी)
के.वि.-1 भुवनेश्वर

श्री मानस बेहेरा
सदस्य-सचिव
नराकास भुवनेश्वर(के.)

श्री आर. एन. चाँद
हिंदी अधिकारी
ए.जी.कार्यालय (ले.ह)

श्रीमती आशाष घोष
सहायक निदेशक (रा.भा.)
प्रधान मुख्य आयकर कार्यलय

श्रीमती नमिता कर
वरि.हिंदी अनुवादक
केंद्रीय उत्पाद सीमा शुल्क

श्री यशवंत कुमार वर्मा
कनि. हिंदी अनुवादक
प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा

श्री सुंदर लाल साव
कनि.हिंदी अनुवादक
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं.हक.)

श्री लोकेश लाल
कनि. हिंदी अनुवादक
प्रधान महालेखाकार (सा. एवं.सा.क्षे.ले.)

श्रीमती सुहाना परवीन
कनि. लेखा अधिकारी
भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

ନାଗରୀକ नागरिक NAGRIK

संयोजक

मुख्य संरक्षक

प्रो. आर.वी. राज कुमार

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर एवं निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर

संरक्षक

डॉ. राज कुमार सिंह

सहायक प्राध्यापक, एसईओसीएस एवं

संपादक

डॉ. रविन्द्र कुमार दुबे एवं श्रीमती प्रनिती सुबोधी

स्नातोकत्तर शिक्षक (हिंदी)

संपादन सहयोग

श्री मानस कुमार बेहेरा, सदस्य सचिव (नाराकास), भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

श्री आर. एन. चाँद., हिंदी अधिकारी, ए जी कार्यालय

श्रीमती आशा घोष, सहायक निदेशक (रा.भा.), प्रधान मुख्य आयकर कार्यालय

श्रीमती नमिता कर, कनि. हिंदी अनुवादक, केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सीमी शुल्क एवं सेवा

श्री यशवंत कुमार वर्मा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय, पूर्व तट रेलवे

श्री लोकश लाल, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, एजी कार्यालय

श्री सुंदर लाल, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, एजी कार्यालय

श्रीमती सुहाना परवीन, कनि. लेखा अधिकारी, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

अंक—4

वर्ष—2018

अनुक्रमणिका

अध्यक्ष, नराकास का संदेश

प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक, भ.प्रौ.सं. का सन्देश

संपादकीय

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु जाँच बिंदु

61 वीं बैठक का कार्यवृत्त

61वीं बैठक की झाँकी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 62 वीं बैठक का कार्यवृत्त

62 वीं बैठक की झाँकी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 63 वीं बैठक का कार्यवृत्त

63 वीं बैठक की झाँकी

राजभाषा के रूप में हिन्दी की चुनौतियाँ

आज का आंदोलन

उत्कल जननी

आने वाला कल है बेटी

कल्पना चावला

जल का महत्व

जाग पड़ो

ज़िन्दगी

नज़रिया

डिजाईन : सुश्री शोभा बारिक एवं श्री निशांत वत्स

शोध छात्र, पृथ्वी, महासागर एवं

जलवायु विज्ञान , भा.प्रौ.सं. भुबनेश्वर

नाइस पिक' से 'अतिसुन्दर छायाचित्र' तक का सफ़र
बेबस जिंदगी
नोटबंदी स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी मानवीय सनसनी
भारत में हिंदी की दशा और दिशा
मुस्कानों से
हिन्दी हमारी भाषा है
मेरी अभिलाषा
वस्तु एवं सेवाकर- एक देश-एक कर-एक बाजार- भारत के कर संबंधी ढांचे में सबसे बड़ा सुधार
विश्व हिंदी सम्मलेन – 2018 – एक झलक
ज्यामिति
सम्पूर्ण हूँ मैं
हाइकु
निर्धन की तरूणी
दो सुमन समर्पित करता हूँ
जय हिंद, जय हिंदी

निशुल्क वितरण के लिए

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं एवं लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण रचनाकारों के अपने हैं। इनसे संपादकीय मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।

अध्यक्ष की कलम से...

प्रिय साथियों,

मुझे यह जान कर प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर की पत्रिका " नागरिक" का चौथा संकरण प्रकाशन होने जा रही है।

मेरा यह मानना रहा है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का प्रमुख उद्देश्य सदस्य कार्यालयों के बीच आपसी समन्वयन एवं सहयोग के माध्यम से भारत सरकार की राजभाषा नीतियों का अनुपालन सुनिश्चित करना है। इसके अलवा समस्त सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों का कलात्मक एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करना है, ताकि वोह राजभाषा हिंदी के विकास में अपना योगदान दे सके| यह पत्रिका जहाँ सदस्य कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों/ कर्मचारियों/ छात्रों की लेखन शैली को एक मंच प्रदान करती है वहीं दूसरी और पाठकों के लिए प्रेरणादयी तथा रोचक तथ्यों के साथ उनका ज्ञानवर्धन करती है।

राजभाषा के सर्वांगीण विकास एवं आपसी समन्वय बनाये रखने में नराकास भुवनेश्वर ई-पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों की पुष्पित एवं पल्लवित रचनाएं और प्रखर विचार इस पत्रिका की गरिमा को अवश्य बढ़ाने में सहायक होंगे और मुझे विस्वास है कि इसका प्रकाशन चलता रहेगा।

मुझे यह भी विश्वास है कि यह पत्रिका समिति के सभी सदस्य कार्यालय के कार्मिकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

राज कुमार

प्रो. आर. वी. राज कुमार

अध्यक्ष, नराकास भुवनेश्वर (के.)

निदेशक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर की ई-पत्रिका "नागरिक" के अंक –4 का प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका केंद्र सरकार के कर्मचारियों के विचार को साझा करने के उद्देश्य से पुनः शुरू किया गया था और काफी हद तक सफल भी रहा| यह पत्रिक हमें राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे नैतिक दायित्व को याद दिलाता है और हमें हिंदी में अधिकाधिक काम करने को प्रेरित करता है। हालाकिं चौथे अंक प्रकाशन में कुछ देरी हुयी पर मुझे पूर्ण विस्वास है कि इसका प्रकाशन बंद नहीं होगा और सभी मिलकर इसे और आगे ले जायेंगे। पिछले अंक के प्रकशन पर हमें बहुत सराहना मिली इसके लिए में संपादक मंडल एवं रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ|

मैं यह आशा करता हूँ कि इस अंक में प्रकाशित की गई सामग्री भी सभी पाठकों को पसंद आएगी और उनका ज्ञानवर्धन करेगी और अंक पांच के लिए लेखकों को और रोचकपूर्ण आलेखों को लिखने हेतु प्रोत्साहित करेगी। मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल को बधाई देता हूँ, उनका प्रयत्न अति सराहनीय है और आशा करता हूँ अगले अंक हेतू इस पत्रिका को समय पर रचनाएँ मिल जायेगी।

यह पत्रिका नराकास भुवनेश्वर के सदस्य कार्यालयों में कार्यरत सभी कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा और मौलिक चिंतन को मंच प्रदान करता है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ई-पत्रिका "नागरिक" को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंदी! जय हिंद!

डॉ. राज कुमार सिंह राज कु० सिंह

प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक एवं

सहायक प्राध्यापक, एसईओसीएस, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

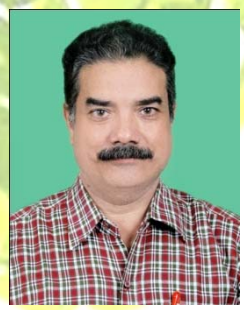

संपादक की ओर से

रचनात्मकता स्तुत्य है और विध्वंस निंद्य अर्थात् मानव कल्याण हेतु जब भौतिक, साहित्यिक आदि रचना की जाए तो उसकी प्रशंसा होनी चाहिए तथा मनुष्यता को हानि पहुँचाने वाले किसी भी नाश की निंदा की जानी चाहिए। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिका 'नागरिक' साहित्यिक रचनात्मकता को प्रशंसित करने का एक प्रयास है। भारत के नागरिक होने के नाते हम सबका यह कर्त्तव्य है कि हम राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी महती भूमिका निभाएँ। इस पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों द्वारा निभाई जा रही महत्वपूर्ण भूमिका को सामने लाने की कोशिश की गई है, जिससे अन्य सुधी जन राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु प्रेरित हो सकें।

यह प्रसन्नता का विषय है कि नए रचनाकार भी नई साहित्यिक काव्य विधा (हाइकु) में अर्थ-गांभीर्यपूर्ण रचना कर अपने साहित्यिक रूझान को प्रकट कर रहे हैं। नए रचनाकार आगे चलकर साहित्य जगत में ऊँचा मुकाम हासिल करेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है। संपादक मंडल ने अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए कुछ रचनाओं में मूल भाव को प्रभावित किए बिना आंशिक संशोधन भी किया है, विश्वास है कि रचनाकार इसे अन्यथा रूप में नहीं लेंगे।

'नागरिक' का आगामी संस्करण पाठकों के सुझावों के अनुरूप, रचना-बहुलता तथा नए कलेवर के साथ आपके समक्ष होगा।

आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

रवीन्द्र कुमार दुबे एवं प्रणति सुबुद्धि
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.1,
भुवनेश्वर।

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु जाँच

- राजभाषा कार्यान्वयन समिति (राकास) का गठन कर प्रत्येक तिमाही में इसकी बैठक आयोजित करें।
- मूल पत्राचार में हिंदी का प्रयोग वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य के अनुसार करें।
- हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्यतः हिंदी में दें।
- धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी दस्तावेज़ों को अनिवार्यतः द्विभाषी रूप में जारी करें।
- वेबसाइट द्विभाषी रूप में तैयार करें और समय-समय पर अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी अद्यतन करें।
- सभी कंप्यूटरों पर यूनिकोड सक्रिय करें।
- प्रत्येक तिमाही में एक पूर्ण कार्यदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाए।
- कार्यालयों में प्रयुक्त सभी फार्मों/ नाम पट्ट/ रजिस्टर के शीर्षक/लेखन सामग्री को द्विभाषी रूप में मुद्रित करें।
- हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त न करने वाले कार्मिकों को भाषा (प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत) का प्रशिक्षण दिलवाएं। इसके साथ ही संबंधित कर्मचारियों को हिंदी टंकण/ हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए भी नामांकित करें।
- विज्ञापनों को हिंदी और अंग्रेजी के समाचार पत्रों में एक साथ प्रकाशित करें।
- हिंदी पुस्तकों पर लक्ष्य अनुसार व्यय किया जाए। वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य हिंदी में उपलब्ध करवाया जाए।
- कार्यालय के अनुभागों का समय-समय पर राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया जाए।
- कार्यालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (राजभाषा विभाग) को तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन भेजी जाए।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में कार्यालयों प्रमुखों की उपस्थिति अनिवार्यतः सुनिश्चित की जाए।
- सेवा पंजियों में प्रविष्टियाँ द्विभाषी रूप में करें।
- राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित 1987 में दिए गए बिंदुओं का अनुपालन सुनिश्चत किया जाए।
- कार्यालय में हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह का आयोजन किया जाए।
- कार्यालय परिसर में राजभाषा के प्रतिकुल वातावरण के लिए “आज का शब्द” और “आज का विचार” प्रदर्शित करें।
- संस्थान में प्रयोगार्थ सभी प्रकार की नेमी टिप्पणियों को फाइलों पर मुद्रित करे और लक्ष्य को प्राप्त करें।
- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की संपूर्ण प्रोत्साहन योजनाओं को अपने कार्यालय में लागू करें।

उपर्युक्त जानकारी कार्यालय के सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को दें और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करें। वार्षिक कार्यक्रम के सभी लक्ष्य गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.nic.inसे डाउनलोड किए जा सकते है।

- संपादन समिति

61 वीं बैठक बैठक का कार्यवृत्त

स्थान : सामुदायिक केन्द्र, अरगुल परिसर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भुवनेश्वर समय : अपराह्न 3.30 बजे

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 61वीं बैठक दिनांक 30.08.2017 को अपराह्न 03.30 बजे अध्यक्षीय कार्यालय भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के स्थाई परिसर अरगुल के सामुदायिक केन्द्र में अपराह्न 3.30 बजे में प्रो. आर. वी. राजकुमार, अध्यक्ष, नराकास(के.), भुवनेश्वर एवं निदेशक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में श्री निर्मल कुमार दुबे, उपनिदेशक(कार्यान्वयन), क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय, कोलकाता बतौर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

बैठक का आरंभ करते हुए डॉ. राज कुमार सिंह, प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर ने सभी सम्मानित सदस्यों का स्वागत किया तथा श्री ओम प्रकाश झा, नए सदस्य-सचिव, नराकास(के.), भुवनेश्वर का सदस्यों से परिचय करवाया तथा उनसे कार्यसूची पर बिन्दुवार चर्चा करने का अनुरोध किया। उसके उपरांत श्री झा ने अध्यक्ष महोदय की अनुमति से निम्न कार्यसूची पर बिंदुवार चर्चा प्रारंभ की ।

मद सं. 61.0 **गत बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि :** सदस्य-सचिव ने दिनांक 06.03.2017 को आयोजित 60वीं बैठक के कार्यवृत्त को संपुष्टि प्रदान करने हेतु सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया जिसे सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से संपुष्टि प्रदान की।

मद सं. 61.1 अनुवर्ती कार्रवाई :

*60.1. **ई-पत्रिका 'नागरिक' हेतु सदस्य कार्यालयों से आलेख मंगाने के संबंध में** : सभी सदस्य कार्यालयों से आलेख मंगाए गए तथा नागरिक के अगले अंक का ई-विमोचन किया गया।*

*60.2. **नराकास के विभाजन पर विचार** : पिछली बैठक में यह प्रस्ताव दिया गया था पर सभी सदस्य कार्यालयों ने एक मत से इसे मानने से इनकार कर दिया।*

मद सं. 61.2. कार्यालयों से प्राप्त राजभाषा हिन्दी रिपोर्ट की समीक्षा : इस बार करीब 20 कार्यालयों से ही हिन्दी रिपोर्ट प्राप्त हुआ जिस वजह से यह निर्णय लिया गया कि बड़े व छोटे कार्यालयों को हिन्दी कार्य को लेकर दिए जाने वाले पुरस्कार को स्थगित कर दिया जाए। रिपोर्ट की समीक्षा करते हुए उपनिदेशक (कार्यान्वयन), श्री निर्मल कुमार दुबे ने सभी कार्यालयों से और बेहतर कार्य करने की अपील की।

मद सं. 61.3. संसदीय राजभाषा समिति की 9वीं रिपोर्ट पर माननीय राष्ट्रपति के आदेश : हाल ही माननीय राष्ट्रपति ने संसदीय राजभाषा समिति की 9वीं रिपोर्ट के विभिन्न मदों पर अपनी स्वीकृति आदेश दिया है। इस संबंध में सदस्य कार्यालयों से अनुरोध किया गया कि वे इसका अक्षरश: पालन करें।

मद सं. 61.3. धारा 3(3) व राजभाषा नियम का अनुपालन : सदस्य सचिव ने सभी सदस्य कार्यालयों से धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले समस्त कागजातों को द्विभाषी तौर पर जारी करने का अनुरोध किया। इसके साथ ही राजभाषा नियम की व्याख्या के साथ-साथ उसके अनुपालना पर संक्षिप्त चर्चा की ।

मद सं. 61.4. कार्यालयों में न्यूनतम हिन्दी पद का सृजन : सदस्य सचिव ने उपस्थित सभी कार्यालय प्रमुखों से अनुरोध किया कि वे अपने-अपने कार्यालय में न्यूनतम हिन्दी पद के सृजन की अवधारणा को साकार रूप प्रदान करें।

मद सं. 61.5. महालेखाकार के कार्यालय से प्राप्त पुरस्कार की राशि का वितरण : महालेखाकार कार्यालय, भुवनेश्वर के द्वारा माह दिसंबर, 2016 में नराकास के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिता के सफल प्रतिभागियों के बीच अध्यक्ष महोदय द्वारा प्रमाणपत्र व पुरस्कार हेतु निश्चित नकद राशि वितरित की गई। जिसके अंतर्गत प्रथम पुरस्कार के तौर पर रु. 2000, द्वितीय पुरस्कार के तौर पर रु. 1500, तृतीय पुरस्कार के तौर पर रु. 1000 तथा सांत्वना पुरस्कार के तौर पर रु. 600, इस प्रकार कुल 24 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया, जिसके तहत कुल रु. 17,100 की राशि प्रदान की गई।

उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय कोलकाता द्वारा संबोधन : उपनिदेशक(कार्या.) श्री निर्मल कुमार दुबे ने राजभाषा को लेकर सरकारी नियमों की विस्तार से व्याख्या की और कहा कि हिन्दी सब के सहयोग से ही अपने निर्धारित लक्ष्य को हासिल कर पाएगी। उन्होंने सभी कार्यालय प्रमुखों से यह अपील की वे अपने अधीनस्थ कार्मिकों द्वारा किए गए हिन्दी कार्यों के लिए उनकी सराहना करें तथा उन्हें प्रोत्साहित करें ताकि वे और बढ़-चढ़ कर हिन्दी कार्य करें। उन्होंने सदस्य कार्यालयों को यह प्रस्ताव भी दिया कि चूंकि, यहां सदस्यों की संख्या 115 हो गई है अत: यदि वे चाहें तो इसको दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। लेकिन, उनके इस प्रस्ताव पर सदस्यों में सहमति नहीं बनी और एकजुटता के साथ ये निर्णय हुआ कि नराकास का विभाजन नहीं किया जाएगा।

अध्यक्षीय संबोधन : अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. राजकुमार ने सबसे पहले सभी कार्यालयों से आए प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया तथा आईआईटी परिसर की संक्षिप्त जानकारी दी। उन्होंने कहा कि दो साल पूर्व तक यहां कुछ नहीं था लेकिन उन्होंने इन दो वर्षों के अंदर दिन-रात एक करके इसे मनोरम और आवासीय परिसर में तब्दील कर दिया। उन्होंने सभी सदस्यों से परिसर-परिभ्रमण का अनुरोध भी किया।

अपने संबोधन के दौरान उन्होंने कहा कि जब कभी भी ऐसी कोई कार्यालयीन फाइल उनके समक्ष मंजूरी के लिए आती है जिसकी भाषा हिन्दी हो तो राजभाषा के उपयोग में हो रही वृद्धि को देखकर उन्हें अति प्रसन्नता होती है। उन्होंने सभी कार्यालयों से अपने अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने का आग्रह किया ताकि राजभाषा के उपयोग में वृद्धि हो सके और हम सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य को हासिल कर सकें। इस अभियान को कारगर बनाने के लिए उन्होंने शुरुवात में छोटे-छोटे कार्यों/टिप्पणियों को हिन्दी में लिखने की सलाह दी। बैठक में प्रतिभागियों की संख्या करीब 120 के पार पहुंचने पर भी उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की तथा ये आशा व्यक्त किया कि आगे भी सदस्यों का उत्साह इसी तरह का देखने को मिलेगा।

सदस्यों का सुझाव : अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन के बाद उपस्थित सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों से इसे और बेहतर करने हेतु सुझाव मांगे जिसमें निम्न बात सामने आई :

1. एक सदस्य कार्यालय के प्रतिनिधि ने अध्यक्ष महोदय से अपने सुंदर अरगुल परिसर में हास्य कवि सम्मेलन कराने का

अनुरोध किया। अध्यक्ष महोदय ने इस पर अपनी सहमति दी।

2. एक और सदस्य ने अपने सुझाव में दिया कि अध्यक्ष महोदय भुवनेश्वर नगर स्थित 10 बड़े कार्यालयों के प्रमुखों से मिलें व वार्तालाप कर कुछ ठोस पहल करें ताकि अन्य कार्यालयों में इसका कुछ सकारात्मक असर दिख सके।

3. एक अन्य सदस्य ने अपने सुझाव में कहा कि सदस्य कार्यालयों के बीच और अधिक समन्वयन होनी चाहिए। उन्होंने ई-पत्रिका 'नागरिक' को हार्ड बॉन्ड में प्रकाशित कर सभी सदस्य कार्यालयों के मध्य वितरण करवाने का अनुरोध किया।

अध्यक्ष महोदय की अनुमति से अन्य मद : इसके अंतर्गत अध्यक्ष महोदय ने ई-पत्रिका 'नागरिक' के तीसरे अंक का विमोचन किया तथा इसके संपादक मंडल के साथ-साथ उन सभी कार्यालयों को धन्यवाद दिया जिन्होंने इसमें प्रकाशन हेतु अपने आलेख भेजे हैं।

अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों से अगली बैठक के स्थान के बारे में पूछा, जिसमें ये निर्णय लिया गया की अगली बैठक भुवनेश्वर में होगी।

अंत में श्रीमती आशा घोष, वरिष्ठ अनुवादक, आयकर कार्यालय, भुवनेश्वर ने उपस्थित सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए शहर से इतनी दूर वो भी महीने के तकरीबन आखिरी वर्किंग डे में आने के लिए उनका विशेष तौर पर धन्यवाद ज्ञापन किया और इसके साथ ही बैठक के समाप्ति की घोषणा कर दी गई।

(ओम प्रकाश झा)
सदस्य-सचिव, नराकास
भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर

(प्रो.आर.वी.राज कुमार)
अध्यक्ष, नराकास एवं निदेशक,

⇒ **राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है। - अवनींद्रकुमार विद्यालंकार।**

⇒ **हिंदी का काम देश का काम है, समूचे राष्ट्रनिर्माण का प्रश्न है। - बाबूराम सक्सेना।**

⇒ **समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है। - कृष्णस्वामी अय्यर।**

⇒ **हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है। - शंकरराव कप्पीकेरी।**

⇒ **अकबर से लेकर औरंगजेब तक मुगलों ने जिस देशभाषा का स्वागत किया वह ब्रजभाषा थी, न कि उर्दू। -रामचंद्र शुक्ल।**

61वीं बैठक की झाँकी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 62 वीं बैठक का कार्यवृत्त

स्थान : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर, प्रेक्षा गृह, समंतापुरी परिसर समय : अपराह्न 3.00 बजे

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 62वीं बैठक दिनांक 28.03.2018 को अपराह्न 03.00 बजे अध्यक्षीय कार्यालय भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के प्रेक्षा गृह, समंतापुरी परिसर में अपराह्न 3.00 बजे में प्रो. आर. वी. राजकुमार, अध्यक्ष, नराकास(के.), भुवनेश्वर एवं निदेशक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में प्रो. भी. आर. पेदिरेद्दी, संकयाधय्क्ष (छात्र कार्य) बतौर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

बैठक का आरंभ करते हुए डॉ. राज कुमार सिंह, प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर ने सभी सम्मानित सदस्यों का स्वागत किया तथा श्री मानस कुमार बेहरा का नये सदस्य-सचिव, नराकास(के.), भुवनेश्वर का सदस्यों से परिचय करवाया तथा उनसे कार्यसूची पर बिन्दुवार चर्चा प्रारंभ की ।

मद सं. 62.0 गत बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि : सदस्य-सचिव ने दिनांक 30.08.2017 को आयोजित 61वीं बैठक के कार्यवृत्त को संपुष्टि प्रदान करने हेतु सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया जिसे सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से संपुष्टि प्रदान की।

मद सं. 62.1 अनुवर्ती कार्रवाई :

*61.1. **ई-पत्रिका 'नागरिक' हेतु सदस्य कार्यालयों से आलेख मंगाने के संबंध में** : सभी सदस्य कार्यालयों से आलेख मंगाए गए तथा नागरिक के अगले अंक का ई-विमोचन किया गया।*

मद सं. 62.2. नराकास के हस्तांतरण पर विचार : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वरर में हिंदी अधिकारी के पद ना होने एवं कनिस्ठ हिंदी अनुवादक के पद रिक्त होने के कारण नरकास के कार्यभार किसी अन्य कार्यालय को लेने का आग्रह किया गया | भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर पूर्ण रूप से अपने स्थायी परिसर में स्थान्तरित हो रहा है, जो भुवनेश्वर शहर से 35 कि.मी. दूर अरगुल, जटनी में स्थित है| नराकास भुवनेश्वर (के.) अधिकतर कार्यालय भुवनेश्वर में स्थित है, जिससे हमें समन्वय में कठिनाई होगी | अतः किसी भुवनेश्वर स्थित कार्यालय को इसकी जिम्मेदारी लेने का आग्रह किया गया| सदस्यों कि प्रतिक्रिया थी कि लेखाकार कार्यालय, आयकर विभाग अथवा पूर्वी तट रेलवे जैसे बड़े कार्यालय को इसकी जिम्मेदारी लेने चाहिए| अध्यक्ष नरकास ने इस हेतू पत्र सचिव राजभाषा विभाग को भेजने हेतू सदस्य-सचिव, नराकास (के.) से कहा| अध्यक्ष नरकास ने सभी कार्यालयों से 10 दिनों में सुझाव देने को कहा गया |

मद सं. 62.3. पत्रिका का प्रकाशन : नरकास भुबनेश्वर (के.) की पत्रिका 'नागरिक' के प्रकाशन पर विचार किया गया एवं नये लोगो को इसकी जिम्मेदारी लेने का आग्रह किया गया| सदस्यों के सुझाव पर नाराकास के गृह पत्रिका "नागरिक" के अगले अंक के संपादन की जिम्मेवारी श्रीमती प्रनिती सुबोधी एवं डॉ. आर. के. दुबे स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी) के. वी. 1 भुवनेश्वर को सौंपा गया एवं सभी से अगले अंक के लिए अपनी रचना भेजने का आग्रह किया गया| पुरने सम्पादकीय मंडल को इसमें सहयोग देने को कहा गया|

मद सं. 62.4. संसदीय कार्यालयों का अंशदान : सभी सदस्यों से नियमित रूप से अपना अंश दान देने का आग्रह किया गया|

मद सं. 62.5. वार्षिक कार्यक्रम योजना : सभी सदस्यों से नरकास भुबनेश्वर (के.) के वार्षिक कार्यक्रम हेतू सुझाव माँगा गया| अध्यक्ष नरकास ने सभी कार्यालयों से आगे आ कर कई तरह के कार्यक्रम वर्ष भर करवाने का आग्रह किया| उन्होंने कहा कि इन कार्यक्रमों के लिए नरकास भुबनेश्वर (के.) पूर्ण सहयोग करेगा|

मद सं. 62.6. नरकास के विभाजन पर चर्चा : नरकास भुबनेश्वर (के.) के सदस्यों की संख्या 120 से अधिक हो गयी है, अतः राजभाषा विभाग इसे दो य दो से अधिक समितियों में विभाजन हेतू कहा है, इस मद पर सभी कार्यालयों से सुझाव मांगे गए| सभी कार्यालयों ने नरकास भुबनेश्वर (के.) का विभाजन ना करने पर जोर दिया | कुछ सदस्यों ने दूरी के आधार पर नये नरकास के गठन का प्रस्ताव किया |

उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के ना आने के कारण उनका संबोधन निरस्त कर दिया गया

अध्यक्षीय संबोधन : अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. राजकुमार ने सबसे पहले सभी कार्यालयों से आए प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया तथा उनके निरंतर सहयोग के लिए धन्यबाद दिया |

प्रो. आर. वी. राज कुमार ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभी कार्यालयों प्रमुखों के प्रति आभार व्यक्त किया एवं पिछले वर्ष नाराकास के तत्वाधान में अधिक कार्यक्रम ना होने पर खेद व्यक्त किया । उन्होंने बड़े कार्यालयों को नाराकास के जिम्मेदारी लेने का आह्वान किया और अस्वस्त किया कि उन्हें भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर से पूर्ण सहयोग मिलेगा | उन्होंने कहा कि अगर नाराकास हमारे पास रहे तो अगली 63 वी. बैठक अपने स्थायी परिसर अरगुल में आयोजित किया जायेगा ।

सदस्यों का सुझाव : इस मद में कोई विशेष सुझाव नहीं आये | कुछ कार्यालयों ने हिंदी के तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने पर कार्यशाला करने को कहा| उनका सुझाव था कि उनके कार्यालय में जा कर प्रशिक्षण देने कि वयवस्था की जाय| जिन कार्यालयों में हिंदी से जुड़े कर्मचारी एवं अधिकारी नहीं है वहां धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले पत्रों के अनुवाद में सहयता प्रदान की जाय|

प्रो. आर. वी. राज कुमार, अध्यक्ष नरकास ने हिंदी से जुड़े कर्मचारी एवं अधिकारियों के समूह बना कर इसमें मदद करने एंव हिंदी के प्रचार प्रसार हेतू कार्यक्रम, कार्यशाला एवं संगोष्ठी करने का आग्रह किया |

कार्यक्रम का समापन श्रीमती सुहाना प्रवीण, लेखा अधिकारी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर, भुवनेश्वर के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

(मानस कुमार बेहरा)
सदस्य-सचिव, नराकास

(प्रो.आर.वी.राज कुमार)
अध्यक्ष, नराकास एवं निदेशक, भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर

62 वीं बैठक की झाँकी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर
62वीं अर्ध वार्षिक बैठक
दिनांक: 28.03.2018

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर
(राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार)
62वीं अर्ध वार्षिक बैठक
दिनांक: 28.03.2018
अध्यक्षीय कार्यालय : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 63 वीं बैठक का कार्यवृत्त

स्थान : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के स्थायी परिसर, अरगुल, जटनी समय : अपराह्न 3.30 बजे

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 63वीं बैठक दिनांक 09.11.2018 को अपराह्न 03.30 बजे अध्यक्षीय कार्यालय भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के सामुदायिक भवन, अरगुल, जटनी में अपराह्न 3.30 बजे में प्रो. आर. वी. राजकुमार, अध्यक्ष, नराकास(के.), भुवनेश्वर एवं निदेशक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में श्री सरोज कुमार महापात्र, आयुक्त, आयकर विभाग अध्यक्ष के साथ मंच पर उपस्थित थे।

बैठक का आरंभ करते हुए डॉ. राज कुमार सिंह, प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर ने सभी सम्मानित सदस्यों का स्वागत किया| श्री मानस कुमार बेहरा, सदस्य-सचिव, नराकास(के.), भुवनेश्वर ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया एवं प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर से कार्यसूची पर बिन्दुवार चर्चा प्रारंभ करने का अनुरोध किया ।

सूची के अनुसार डॉ. राज कुमार सिंह, प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर ने नराकास की गतिविधियों एवं हाल हीं में संपन्न विश्व हिंदी सम्मलेन – 2018 की मुख्य झलकी एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों से जुड़े अनुसंषाओं पर प्रकाश डाला और केंद्र सरकार के कार्यालयों प्रमुखों से अनुरोध किया कि आपसी सहयोग के माध्यम से हम नगर में राजभाषा नीतियों का कार्यान्वयन बढ़ाएं। तत्पश्चात अध्यक्ष नराकास की अनुमति से बैठक की कार्यसूची पर बिंदुवार चर्चा प्रारंभ की गई।

मद सं. 63.0 गत बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि : डॉ. सिंह ने दिनांक 28.03.2018 को आयोजित 62वीं बैठक के कार्यवृत्त को संपुष्टि प्रदान करने हेतु सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया जिसे सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से संपुष्टि प्रदान की।

मद सं. 63.1 अनुवर्ती कार्रवाई : पिछले बैठक के निर्णयों के अनुवर्ती करवाई से सभी सदस्यों को अवगत करवाया गया| कई सदस्यों ने अध्यक्ष कार्यालय के दूर होने और समन्वय में कमी का भी उल्लेख किया|

63.2. ई-पत्रिका 'नागरिक' हेतु सदस्य कार्यालयों से आलेख मंगाने के संबंध में : सभी सदस्य कार्यालयों से आलेख मंगाए गए ताकि नागरिक के अगले अंक का ई-प्रकाशन हो सके। डॉ रविन्द्र कुमार दुबे, संपादक नागरिक ने रचनायों के ना आने का उल्लेख किया जिस पर अधक्ष महोदय ने अपनी चिंता जाहिर की और सभी सदस्यों से 15 दिन के भीतर अपने अपने कार्यालय से रचनाएँ एकत्र कर डॉ. दुबे जी को भेजने को कहा |

मद सं. 63.3. नराकास के हस्तांतरण पर विचार : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर में हिंदी अधिकारी के पद न होने एवं कनिष्ठ हिंदी अनुवादक के पद रिक्त होने के कारण नरकास के कार्यभार किसी अन्य कार्यालय को लेने का आग्रह किया गया था | भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर पूर्ण रूप से अपने स्थायी परिसर में स्थान्तरित हो चुका है, जो भुवनेश्वर शहर से 35 कि.मी. दूर अरगुल, जटनी में स्थित है| नराकास भुवनेश्वर (के.) अधिकतर कार्यालय भुवनेश्वर में स्थित है, जिससे समन्वय में कठिनाई हो रही है जिसका जिक्र कई कार्यालयों ने भी किया | श्री आर. एन. चाँद, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, प्रधान लेखाकार कार्यालय (लेखा एवं हकदारी) ने सभी सदस्यों को बताया कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा उनके कार्यालय को नराकास (के.) भुवनेश्वर को अध्यक्षता लेने को कहा गया है जिसे उनके कार्यालय ने स्वीकार कर पत्र भेज दिया है एवं हस्तांतरण पत्र का इंतज़ार कर रहे है | डॉ. सिंह ने सदस्यों को बताया कि इस प्रक्रिया को यथाशीघ्र संपन्न करने हेतू पत्र भेजा जा चुका है | आयकर आयुक्त श्री महापात्र जी ने अपने कार्यालय से पूर्ण सहयोग का आश्वाशन दिया और जिम्मेदारी मिलने पर नराकास (के.) भुवनेश्वर जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार बतया |

मद सं. 63.4. संसदीय कार्यालयों का अंशदान : सभी सदस्यों से नियमित रूप से अपना अंश दान देने का आग्रह किया गया| श्री सोमनाथ हंस्दाह, सदस्य सचिव, रेलवे भर्ती बोर्ड ने बही खाता विवरण अगले बैठक में देने का आग्रह किया |

मद सं. 63.5. नराकास के तत्वाधान में विभिन्न गतिविधियों के आयोजन: सभी सदस्यों से नरकास भुबनेश्वर (के.) के तत्वाधान में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करने का आग्रह अध्यक्ष नरकास ने सभी कार्यालयों से किया ताकि वर्ष भर कार्यक्रम होते रहें|

मद सं. 63.6. नरकास के विभाजन पर चर्चा : नरकास भुबनेश्वर (के.) के सदस्यों की संख्या 120 से अधिक हो गयी है, अतः राजभाषा विभाग इसे दो य दो से अधिक समितियों में विभाजन हेतू कहा है, इस मद पर सभी कार्यालयों ने नरकास भुबनेश्वर (के.) का विभाजन ना करने के अपने विचार पर आदिग रहने को कहा एवं अध्यक्ष महोदय ने इस मुद्दे पर हर बैठक में चर्चा न करने को कहा |

उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के आखरी समय में व्यक्तिगत व्यस्तता के कारण न आने से उनका संबोधन निरस्त कर दिया गया और वरिष्ठ अधिकारियों और कार्यालय प्रमुखों से हिंदी के अनुप्रयोग पर अपने विचार व्यक्त करने को कहा गया |

सर्वप्रथम श्री सरोज कुमार महापात्र, आयुक्त आयकर विभाग ने अपने कार्यालय के तरफ से हिंदी के प्रयोग में आने वाली दिक्कतों को दूर करने में पूर्ण सहायता का आश्वासन दिया | उन्होंने अपने संबोधन में सदस्य कार्यालयों के हिंदी के प्रति उत्साह की प्रसंशा की और कहा हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा होनी चाहिए | प्रो. सुधाकर पांडा, निदेशक राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान ने विज्ञान में हिंदी के प्रयोग एवं अपने संस्थान के प्रयासों के बारे में बताया| श्री सोमनाथ हंस्दाह, सदस्य सचिव, रेलवे भर्ती बोर्ड, रेलवे के भर्ती परीक्षा विभिन्न भारतीय भाषायों में नई तकनीक एवं इन्टरनेट सेवाओं के माध्यम से करवाती है |उन्होंने कहा कि हिंदी उसमे सबसे लोकप्रिय है और यह सभी क्षेत्र में बोली जाती है |

अध्यक्षीय संबोधन : अपने अध्यक्षीय संबोधन में आर. वी. राज कुमार ने सबसे पहले सभी कार्यालयों से आए प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया तथा उनके निरंतर सहयोग के लिए धन्यबाद दिया | उन्होंने भा.प्रौ. सं. भुवनेश्वर के स्थाई परिसर में होने वाले विकास से सभी सदस्यों को अवगत करवाया |

प्रो. आर. वी. राज कुमार ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि नराकास एक आपसी समन्वयन का मंच है जिसके माध्यम से हम एक दूसरे की सहायता कर सकेंगे। उन्होंने अपने संबोधन में सभी सदस्य कार्यालयों से अनुरोध किया कि हम सभी आपसी समन्वय स्थापित करे जिससे हम राजभाषा नीतियों का कार्यान्वयन को सुचारू रूप से कर सकें। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हम वर्ष भर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करते रहें ताकि हम निरंतर एक दूसरे की सहायता कर सकें। दिनांक 8/11/2018 को आयोजित कार्यशाला का भी जिक्र उन्होंने किया एवं मुख्या वक्ता श्री राजीव कुमार रावत, वरिष्ठ हिंदी आधिकारी, भा. प्रौ. सं. खरगपुर के प्रति आभार व्यक्त किया । ई-पत्रिका नागरिक के लिए कम रचनायों के आने पर उन्होंने अफसोस जाहिर किया और सभी सदस्य कार्यालयों से आग्रह किया जिस उत्साह के साथ वो इस बैठक में भाग लेते हैं, उसी उत्साह से अपने कार्यालय के रचनायों को भेजें, ताकि हमारी हिंदी आगे बढे | अध्यक्ष महोदय ने हिंदी से जुड़े कर्मचारी एवं अधिकारियों के समूह बना कर इसमें मदद करने एंव हिंदी के प्रचार प्रसार हेतू कार्यक्रम, कार्यशाला एवं संगोष्ठी करने का आग्रह किया |

सदस्यों का सुझाव : अंत में सदस्य कार्यालयों से राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुए। इस बैठक में नराकास के विभिन्न सदस्य कार्यालयों ने अपने-अपने यहाँ राजभाषा नीतियों के कार्यावन्यन के अनुपालन दृष्टि से तैयार की गई सामग्रियों एवं पत्रिकाओं का वितरण किया। बैठक में उपस्थित डॉ. ओम प्रकाश वर्मा को उनकी पुस्तक "भारत में जल एवं खाद्य सुरक्षा के जलवायु परिवर्तन के अनुकूल कृषि" हेतू राजभाषा गौरव मौलिक पुरस्कार लेखन पुरस्कार योजना 2017 में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने पर बधाई दी गयी | डॉ. वर्मा ने अपने पुस्तक एवं पुरस्कार के अनुभवे सभी सदस्यों से साझा किया और सदस्यों को मौलिक लेखन के लिए प्ररित किया |

बैठक के एक दिन पूर्व 08 नवम्बर 2018 को नराकास भुवनेश्वर के सदस्य कार्यालयों के कर्मियों के लिए "हिंदी कंप्यूटिंग एवं कार्यालीन कार्य अनुप्रयोग पर एक कार्यशाला "भी आयोजित की गयी थी जिसमे श्री राजीव कुमार रावत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, भा.प्रौ.सं. खरगपुर मुख्य वक्ता थे | इसमें नई तकनीक द्वार हिंदी में सरलता से कार्य करने के गुण सिखाये गए | बैठक का समापन श्रीमती सुहाना परवीन, कनिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

(मानस कुमार बेहरा)

सदस्य-सचिव, नराकास

(प्रो.आर.वी.राज कुमार)

अध्यक्ष, नराकास एवं निदेशक,

भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर.

63 वीं बैठक की झाँकी

echnology Bhubaneswar
ARAT
ಕನ್ನಡ
తెలుగు

chnology Bhubar
ar
बैठक एवं कार्यशाला

अनमीया

Indian Institute

Indian Institute of Technology Bhubaneswar
ARAT

राजभाषा के रूप में हिन्दी की चुनौतियाँ

किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति की पहचान में उस देश की राजभाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारे भारत देश के संदर्भ में यह बात और भी महत्वपूर्ण है। हमारा देश विविधता में एकता का देश है। एक प्रचलित लोकोक्ति के अनुसार हमारे देश में प्रत्येक कोस पर पानी और प्रत्येक चार कोस पर वाणी बदल जाती है।

एक अनुमानित आँकड़े के अनुसार हमारे देश में पचपन भाषाएँ मुख्य तौर पर बोली जाती है और भाषाओं की भी अपनी-अपनी उपबोलियाँ हैं। परंतु हिन्दी हमारे देश की एक बड़ी जनसंख्या द्वारा बोली जानेवाली भाषा के साथ-साथ गैर हिन्दी भाषियों द्वारा भी सरलता से समझी जानेवाली भाषा है। संभवतः इन्हीं कारणों से हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त होने का गौरव प्राप्त हुआ।

परंतु ऐसा नहीं है कि एक राजभाषा के रूप में हिन्दी के समक्ष चुनौतियाँ नहीं है। यह एक स्याह पक्ष ही है कि राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त होने के इतने वर्षों के बाद भी हिन्दी का विस्तार अपने लक्ष्यों के अनुरूप नहीं हो पाया है। बहुत सारे लोगों की यह सोच है कि अंग्रेजी, हिन्दी के विकास में एक बड़ी बाधा है। मैं अंग्रेजी को हिन्दी के विकास में कोई बाधा या चुनौती नहीं मानता। हिन्दी की वास्तविक बाधा अंग्रेजी मानसिकता है। अंग्रेजी मानसिकता वाले लोगों में हम जैसे वे लोग भी शामिल हैं जो हिन्दी की रोटी तो खाते हैं लेकिन गुण अंग्रेजी का गाते हैं। मैं मानता हूँ कि हिन्दी को अपने दैनिक जीवन में व्यवहार की भाषा बनाए बिना इसे हम वो सम्मान शायद ही दिला पायें जिसकी हम अपेक्षा रखते हैं। यदि हिन्दी हमारे घर में व्यवहार होगी तो स्वाभाविक ही वो कार्यालय में व्यवहार में आएगी।

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना, देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।"

.महात्मा गांधी

हमारा देश अंग्रेजों से तो वर्ष 1947 में ही मुक्त हो गया परंतु हम उस मानसिक दासता से आज तक पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाये जो अंग्रेजों के शासनकाल में हमारे मस्तिष्क में घर कर गया था। हम आज भी वही प्रवृति के हैं जो हमसे अपनी भाषा और संस्कृति को निम्न एवं विदेशी संस्कारों को उच्च मनवाती है। हमें इस प्रवृति का त्याग कर सर्वग्राही बनने के साथ-साथ स्वाभिमानी बनना होगा। हमें हिन्दी के प्रसार के ईमानदार प्रयास के साथ अन्य भारतीय भाषाओं का भी सम्मान करते हुए, उन भाषाओं को अपनाते हुए, हिन्दी प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करना होगा। हिन्दी को राजभाषा के रूप में सफल बनाना कानून की बाध्यता मात्र से संभव नहीं होगा। भाषा का जुड़ाव भावना से होता है। अतः हम हिन्दी प्रेमियों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ईमानदारी से भावनात्मक स्तर पर जाकर इसके प्रसार के लिए कार्य करना है।

रंजित कुमार सिंह
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
केंद्रीय लोक निर्माण विभाग
भुवनेश्वर

"हिंदी में राष्ट्रभाषा बनने की पूरी क्षमता है।"

-राजा राममोहन राय

"हिंदी वह भाषा है जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारतमाता के लिए सुंदर हार का सृजन करेगी।"

.डॉ. जाकिर हुसैन

"कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता। विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा की हिमायत करने वाले जनता के दुश्मन हैं।"

-महात्मा गांधी

आज का आंदोलन

'आंदोलन' का आज देश, देख रहा तमाशा है।
ये क्या हो गया देश में, क्या लोगों में इतनी निराशा है।
आंदोलन होते थे कभी देश के खातिर, और हमारे सम्मान में,
आज कुछ मतलब के हैं आंदोलन, देश के अपमान में।
कभी विदेशी शक्तियों से लड़कर, अपने हक को छीना है,
आज अपने मतलब की खातिर, झुका रहे देश का सीना है।
आंदोलन करवाने का कुछ लोगों ने, ले रखा ठेका है,
आंदोलन में हो रहे वही शरीक, जिन्होंने खुद को बेचा है।
चंद रुपयों की खातिर, लोग प्रदर्शन में भाग लेते हैं,
बाहरी शक्तियों के बहकावे में आकर, देश की क्षति कर देते हैं।
राजनीति का षड्यंत्र, आज के आंदोलन पर हावी है,
एक-दूसरे को नीचे गिराने में, समझी अपनी नवाबी है।
याद करो बापू के आंदोलन, जब सबके हित के लिए खड़े थे,
देशवासियों की खातिर, अंग्रेज़ों से डटकर लड़े थे।
आज आंदोलन का विषय भी, सोच से परे है।
फिर भी इसमें भाग लेकर, लोग आपस में ही लड़े हैं।
आज़ादी की आड़ में, कुछ दहशतगर्दों की मनमानी है,
शामिल हो रही है जनता, क्योंकि इससे अनजानी है।
सोच-समझकर लोगों को, किसी के बहकावे में न आना होगा,
देश विरोधी आंदोलन को, हर हाल में दबाना होगा।
वीरों की इस पावन धरती को, फिर से स्वर्ग बनाना होगा,
भाईचारे और स्वदेश प्रेम से, फिर से समृद्धि लाना होगा।
आंदोलन को सिर्फ देश-हित में, करना ही विकल्प करें,
आओ इस महान देश की रक्षा का संकल्प करें।

सतीश कुमार
वरि. लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रबंधन - I

उत्कल जननी

उत्कल की पावन धरती से भारत देश को जाना है
भारतीय संस्कृति को संजोये, इसका इतिहास पुराना है,

स्वभाव में बसती है शांति, हिंसा का नहीं ठिकाना है,
भाई-चारा, सौहार्द्र-प्रेम यहाँ कण-कण में समाया है।

वीर-सुभाष की जन्मभूमि है, कई वीरों की जननी है,
आओ हमें इस देश की खातिर, उत्कल की सेवा करनी है।

जगन्नाथ विराजमान जहाँ पर, लिंगराज की छत्र-छाया है,
कदम रखते ही इस भूमि पर, सब पापों से मुक्ति पाया है।

उत्कल की यह भूमि सच में कितनी पावन है,
स्वर्ग है ये भूमि, जिसका भगवान ने भी थामा दामन है।

एक तरफ सागर की दहाड़, पर्वत और पठार है,
दूसरी तरफ हरियाली, जंगल और बहार है।

जहाँ दिन की शुरूआत होती है प्रभु के जयकारों से,
ऐसी पावन है ये भूमि, लोगों के संस्कारों से।

सुन्दर ये धरती है प्यारी, स्वच्छता का बसेरा है,
सूरज की प्यारी किरणों से होता यहाँ सवेरा है।

भारतीयता की झलक "अनेकता में एकता" यहाँ पाया है ,
भारत का इतिहास उत्कलवासियों के दिलों में समाया है।

उपजाऊ भूमि, खनिज संपदाओं का भंडार और हीराकुंड इसकी शान है,
सच में यह उत्कल जननी बड़ी पावन और महान है।

सतीश कुमार
वरि. लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रबंधन - I

आने वाला कल है बेटी

सौभाग्य लेकर आती है बेटी,

आशा के दीप जलाती है बेटी।

गुनगुनाती सुबहें और शामें गुलाबी

लम्हा-लम्हा खुशनुमा बनाती हैं बेटी।

आने वाला कल है बेटी

प्रेम विश्वास का मिले जो सहारा

बन जाती है एक सबल सहारा।

हृदय है सद्गुणों से सुसज्जित,

होता घर आँगन पुष्पित पल्लवित।

गंगा–सी पवित्र पावन होती हैं बेटी

लक्ष्मी और सरस्वती होती है बेटी

आने वाला कल है बेटी।

अमीषा सिन्हा

बारहवीं

जवाहर नवोदय विद्यालय

"राष्ट्रीय एकता का सर्वश्रेष्ठ माध्यम हिंदी है।"

-डॉ. जाकिर हुसैन

कल्पना चावला

कल्पना चावला का था सपना
अंतरिक्ष यात्री बनने का,
अंतरिक्ष यान में बैठकर
सितारों से भी आगे जाने का।

पढ़-लिखकर वह गई अमेरिका
अपना सपना पूरा करने के लिए,
आखिरकार उसे मिला मौका
अंतरिक्ष में जाने के लिए।

क्या-क्या सोचकर गई थी
मन में लिए सपने अनेक,
ज्ञान की नई राह खोजने
कि कैंसर भी दे घुटने टेक।

लौटते समय हुई दुर्घटना
दुर्भाग्य था हमारा,
रह गई वह सितारों के पास
खुद बन गई एक सितारा।

दीपशिखा महापात्र
दसवीं

जल का महत्व

जल है जीवन जल है भविष्य

ज्ञानी होकर भी इसे बरबाद क्यों करता है मनुष्य।

जल संपदा है जल है वैभव

जल से ही जीवन है संभव।

हर आदमी औरत को लेनी होगी कसम

जल-संरक्षण से ही होगा भविष्य सुगम।

हाथ में हाथ डालकर हम प्रगति-राह पर चलेंगे

जल-संरक्षण कर हम सभी धरती की रक्षा करेंगे।

प्रार्थना सेनापति

नौवीं

"दुनिया भर में शायद ही ऐसा विकसित साहित्य एवं भाषा हो, जो सरलता और अभिव्यक्ति-क्षमता में हिंदी की बराबरी कर सके।"

.फॉदर कामिल बुल्के

"हिंदी एक जानदार भाषा है, वह जितनी बढ़ेगी उतना लाभ होगा।"

-पं. जवाहरलाल नेहरू

जाग पड़ो

जाग पड़ो सब के सब, नव प्रभात को आने दो
बीते कल की बातों को अब, जाने भी दो, जाने भी दो।

ये कलियाँ खिलने वाली तुमको ही देखें बेचारी,
भूल गए हो क्यूँ तुम अपने गुलशन की जिम्मेदारी
फर्ज निभाकर अपना, इनको खिलने दो, मुस्काने दो
जाग पड़ो सब के सब, नव प्रभात को आने दो

इस दुनिया का जीवन तुमको, सुन लो अब नया बनाना है
अब हिंदू-मुस्लिम के झगड़े में, सुन लो अब नहीं आना है
जाति धर्म की दीवारों को, हर मन से मिट जाने दो
जाग पड़ो सब के सब, नव प्रभात को आने दो

दिलवाले हो तुम, अब सबको आईना दिखला दो
शांति-प्रेम से सबको जीवन जीने का ढंग सिखला दो
झुलस रहे जो ग़म की चिता में, उन्हें चैन अब पाने दो
जाग पड़ो सब के सब, नव प्रभात को आने दो

ज्योत्सनामयी सेनापति
क.भ.नि.सं., क्षेत्रीय कार्यालय,

"सच कहता हूँ भारत का तब उन्नति कमल खिलेगा हिंदी।
सब भाषाओं से तुझको जब ऊँचा स्थान मिलेगा हिंदी।।"

.रामचरित उपाध्याय

ज़िन्दगी

कितनी नई अंगड़ाई
लेती है यह ज़िन्दगी
मौत से लड़कर ही
रंग लाती है ज़िन्दगी।
ज़िन्दगी है उसी की
जो सह लेते हैं गमों को
हर किसी को सहने की ताकत
नहीं देती है ज़िन्दगी।

पल-पल जीते हैं सब
अपने लिए ही ज़िन्दगी
भला आदमी है जो जीता है
दूसरे के लिए ज़िन्दगी।
खुशी और ग़म का मेला है
यह प्यारी सी ज़िन्दगी
जो मुसकराकर अपना ले
उसके नाम है ये ज़िन्दगी।

प्रीतम कुमार श्रीचंदन
आठवीं

"हिंदी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।"

रामचरित उपाध्याय

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।"

-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

नज़रिया

नारी के प्रति समाज का नज़रिया तंग क्यों है?

सोनाग्राफी मशीन यह अफसोसजनक यंत्र क्यों है?

चिकित्सकीय सेवा भी लोभवश हुई परतंत्र है

आज बेटों के मुकाबले बेटियाँ कम, एक चिंतनीय प्रसंग है।

असीमित दावेदार लड़के और सीमित लड़कियाँ

सामाजिक जंग छिड़ने का एक कारण लिंग परीक्षण तंत्र है।

कन्या को नकारना, शर्मनाक प्रयत्न है माँ

इतना मत सोचो, न डरो, न घबराओ माँ।

मुझे बचाने शासन-प्रशासन ने किए कई जतन हैं

लड़कों की तरह लड़कियाँ भी अनमोल रतन हैं।

मैं हूँ बच्ची तुम्हारी मुझे अपना लो माँ

दुलार कर अपने आँचल में मुझे सुला लो माँ।

मुस्कान सिन्हा
दसवीं
जवाहर नवोदय विद्यालय

"मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ परन्तु मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो यह मैं नहीं सह सकता।"

.विनोबा भावे

‘नाइस पिक‘ से ‘अतिसुन्दर छायाचित्र‘ तक का सफ़र

भारत की अधिकांश जनता हिंदी बोलती है किन्तु भारत में ही मोबाइल फोन में हिंदी के लिए दो (2) दबाना पड़ता है। जिन लोगों ने किसी कम्पनी के कस्टमर केयर में बात किया होगा, उन लोगों ने जरूर सुना होगा कि “हिंदी के लिए दो दबाएँ।“ हम लोग इस बात पर ज्यादा गौर नहीं करते क्योंकि तकनीकि में ज्यादातर अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होता है, उसके बाद किसी अन्य भाषा का।

फेसबुक और वाट्सएप सोशल मीडिया के दो ऐसे माध्यम हैं, जिसने बच्चे से लेकर बूढ़ों तक को अपनी ओर आकर्षित किया है। पहले लोग सुबह-सुबह उठकर प्रभु का स्मरण किया करते थे और आज फेसबुक और वाट्सएप का नोटिफिकेशन चेक करते हैं। बच्चे पढ़ने-लिखने से पहले ही फेसबुक और वाट्सएप चलाना सीख लेते हैं। वैसे देखा जाए तो इन सोशल साइटों पर बहुत अच्छे-अच्छे ज्ञानवर्द्धक बातें भरी पड़ी होती हैं और ये अपनी बातों को लोगों तक पहुँचाने का बहुत ही अच्छा माध्यम है।

हम किसी भी माध्यम से जब अपने विचारों को प्रकट करते हैं, तो भाषा का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान होता है। हम अपने विचारों को अपनी भाषा में ही ज्यादा बेहतर ढंग से रख पाते हैं। अगर कोई अन्य भाषा में अपने विचारों को प्रकट करने की कोशिश भी करे तो विचारों के अनुसार शब्द नहीं मिलते या सीमित शब्द ही मिल पाते हैं। उदाहरण के तौर पर जब हम शुरूआत में फेसबुक और वाट्सएप उपयोग करना सीख रहे थे तब कॅमेंट बॉक्स में ‘नाइस पिक‘ लिख देते थे। जब हम पूरी तरह इनका उपयोग करना सीख लेते हैं तब अपने विचारों को रखना शुरू करते हैं और हम निस्संकोच अपनी भाषा में किसी की प्रशंसा में दो शब्द लिखते हैं, जैसे- अतिसुंदर छायाचित्र, बहुत सुंदर, आपका चित्र देखकर परमानन्द की

“भारतीय जनता के बीच काम करने के लिए हिंदी ही एकमात्र साधन है।”

.जयप्रकाश नारायण

हमारे अपने विचार; जो अपनी भाषा में होती हैं, लोगों को ज्यादा आकर्षित करती हैं। आज सोशल मीडिया पर बहुत से लोग अपने विचार या किसी मुद्दे पर अपनी राय हिंदी में लिख रहे हैं, जिसे ज्यादा से ज्यादा लोग पढ़-समझ रहे हैं और लाभान्वित भी हो रहे हैं। दिखावे के लिए 'नाइस पिक' लिखने वाले लोग; जो कि हिंदी का अच्छा ज्ञान भी रखते हैं, वो अब हिंदी में लिख रहे हैं। जिस तरह पहले अंग्रेजी में बोलना-लिखना फैशन था, आज शुद्ध हिंदी में बोलना-लिखना भी महत्वपूर्ण होता जा रहा है। वैश्विक भाषा होने के कारण अंग्रेजी सीखना जरूरी है लेकिन ऐसा बिल्कुल न हो कि हम अपनी मातृभाषा हिंदी में ही पढ़ना-लिखना भूल जाएँ या बोलने में संकोच करें।

प्रभाकर कुमार गुप्ता
(अवर श्रेणी लिपिक)
केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग,
भुवनेश्वर

एक भाषा के बिना भारत में एकता नहीं हो सकती और वह भाषा हिंदी है।"

.केशवचन्द्र सेन

"हिंदी देश की एकता की ऐसी कड़ी है जिसे मजबूत करना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है।"

.इन्दिरा गांधी

"देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।"

-नेताजी सुभाष चंद्र बोस

बेबस जिंदगी

ओह! यह बेबस जिंदगी, यहाँ दीना मांझी को जीना पड़ता है
अपने कंधों पर पत्नी के शव को ढोकर जाना भी पड़ता है
यहाँ आँखों में आँसू लिए दिल के टुकड़े
के शव का बोझ उठाना पड़ता है, पेट की ज्वाला मिटाने के
लिए यहाँ जूठी पत्तल से खाने
के टुकड़ों को समेटना पड़ता है , यहाँ अरमानों का
गला दबता है हर पल , यहाँ रोटी के लिए
अस्मिता को गिरवी रखना पड़ता है,
हर पल जीने के लिए एक नया संघर्ष करना पड़ता है
पर क्या करें, है ये बेबस जिंदगी, जीना तो पड़ता ही है |

सुकान्ति कुमारी पंडा
हिन्दी अनुवादक, ग्रेड-II
क.भ.नि.सं., क्षेत्रीय कार्यालय,

"राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिंदी और नागरी का प्रचार आवश्यक है।"

-लाला लाजपत राय

नोटबंदी स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी मानवीय सनसनी

भारत 1947 में अंग्रेजों के चंगुल से स्वतंत्र हुआ था। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत लंबे समय तक भारतीयों ने विभाजन का दर्द झेला। कुछ संभले तो 1962 का भारत-चीन युद्ध, 1965 में भारत-पाक युद्ध और दक्षिण भारतीयों का हिंदी विरोधी आंदोलन। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के दौर में शुरु हुआ सनसनीखेज घटनाओं का दौर। 1969 में राष्ट्रपति चुनाव के निर्दलीय उम्मीदवार श्री वी.वी.गिरी चुनाव जीते और कांग्रेस के अधिकृत प्रत्याशी चुनाव हार गए। इस चुनाव से पूर्व जब अमेरीकी राष्ट्रपति रिचर्ड निकसन भारत आए थे तो उनकी आगवानी एवं बिदाई श्री एम. हिदायतुल्ला (सर्वोच्च न्यायालय के) उस समय के मुख्य न्यायधीश ने बतौर कार्यवाहक राष्ट्रपति की थी। 1971 से प्रभावी 26वें संविधान संशोधन के अनुसार रजवाड़ों के प्रीवी पर्स रद्द कर दिए गए। अंग्रेजी शासन की समाप्ति के उपरांत रियासतों को भारतीय संघ में मिलाने के एवज में रियासतों के रजवाड़ों को पेंशन मिलती थी जो इस संविधान संशोधन के माध्यम से समाप्त कर दी गई।

श्रीमती इंदिरा गांधी ने 19 जुलाई,1969 को 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया तथा अपने दूसरे कार्यकाल 1980 में 6 और बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। उन्हीं के दौर में 55 भारतीय जनरल बीमा कंपनिओं और 52 अन्य सामान्य कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण किया गया था। 1971 में भारत ने भारत-पाक युद्ध जीता। न केवल जीता पाकिस्तान की लगभग एक लाख सेना ने भारतीय सेना के सामने आत्मसमर्पण किया जो कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद किसी सेना की ओर से किए गए आत्मसमर्पण का विश्व रिकॉर्ड है, 1974 में पोखरण में परमाणु बम का परीक्षण करके पूरी दुनिया को हिला दिया। श्रीमती इंदिरागांधी के कार्यकाल में ही भारत खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हुआ था मगर 1974 के परमाणु परीक्षण के बाद नाटो देशों के दबाव में अनेक देशों की ओर से भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए गए। देश में महंगाई एकदम से बढ़ गई जो कि जनता के लिए अहितकर थी। उनके विरोधी उनपर हावी हो गए। उन्हें मजबूर होकर 1975 में देश में आपातकाल की घोषणा करनी पड़ी। आपातकाल के दौरान ही संविधान में, 42 वां संविधान

संशोधन और राजभाषा नियम, 1976 जैसी प्रमुख सनसनियां सामने आईं। मगर श्रीमती इंदिरा गांधी 1977 का आम चुनाव हार गईं। उनके दूसरे कार्यकाल की त्रासदियां 1984 का ब्लू स्टार ऑपरेशन और पूरे देश में सिखों के विरुद्ध दंगे तो आज भी भूत बनकर कांग्रेस का पीछा कर रही हैं। उनके बाद केवल एक सनसनी श्री राजीव गाँधी ने अयोध्या में राम मंदिर के ताले खुलवाकर फैलाई जो कि कांग्रेस की नीतियों से हटकर थी जिसका लाभ भारतीय जनता पार्टी को आज तक हो रहा है और वह सत्ता का सुख भोग रही है। 1991 से 1996 तक श्री पी.वी.नरसिम्हा राव के नेतृत्व में चली कांग्रेस की अल्पमत सरकार ने तो ऐसी सनसनियां फैलाईं जिनसे भाजपा को झोलियां भर-भर कर लाभ मिल रहा है। डॉ. मनमोहन सिंह को वित्त मंत्री बनाकर उदारीकरण की नीति लागू कराकर भारत की उद्योग और अर्थनीति में भारत की जनता के विरुद्ध जाने वाले निर्णयों को लागू कराना, 1992 में बाबरी मस्जिद के विध्वंस को रोकने में असफलता और कश्मीर नीति से संबंधित पाकिस्तान को माकूल जवाब देने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ में श्री अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व में भारतीय दल संयुक्त राष्ट्र संघ में भेजना। 1998 से 2004 तक चली एनडीए की सरकार में पाकिस्तान में छुपे भारतीय मुजरिमों की एक सूची इस आग्रह के साथ पाकिस्तान को सौंपी गई थी कि इन मुजरिमों को भारत को सौंपा जाए। बदले में पाकिस्तान की ओर से भी एक सूची आई और कहते हैं कि उसमें उस समय के भारतीय उप प्रधानमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी का भी नाम था। दिसंबर,1999 में भारतीय विमान का अपहरण और बदले में दी गई फिरौती व पाकिस्तानी आतंकवादियों का छोड़ा जाना प्रमुख सनसनियों में शामिल है। डॉ. मनमोहन सिंह 2004 से लेकर 2014 तक भारत के प्रधानमंत्री रहे। उनसे जितना बन पड़ा किया।

मई, 2014 से नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चल रही वर्तमान सरकार की कुछ सनसनियां निम्नानुसार हैं। प्रधानमत्री के शपथग्रहण समारोह में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री सहित सभी सार्क प्रमुखों को आमंत्रित किया, प्रधानमंत्री का सपना सार्क देशों के लिए उपग्रह प्रेषण का प्रस्ताव आया, नमामी गंगे योजना, स्वच्छता अभियान, योगा दिवस, बुलेट ट्रेन चलाने की घोषणा, जनधन योजना के खाते खोलने का ढिंढोरा(इन्हीं खातों में लेख लिखे जाने तक 72 हजार करोड़ से अधिक की राशि जमा हो चुकी है, जिससे सरकार परेशान है कि यह कालाधन भी हो सकता है), गरीबों व किसानों का फसल तथा

बीमा योजना का ढिंढोरा, सर्जीकल स्ट्राईक, प्रधानमंत्री की अंधाधुंध विदेश यात्राएं और एक के बाद एक अनेक देशों को लाभ पहुंचाना और सबसे बड़ी सनसनी नोटबंदी।

08 नवंबर, 2016 को नोटबंदी की घोषणा होते ही पूरा देश अचंभित हो गया। दस प्रतिशत जनता के पास जमा कालेधन को बाहर निकालने के लिए देश-विदेश की जनता को मिलाकर भारत की पूरी आबादी के बराबर जनता को भिखारी बनने के लिए मजबूर कर दिया गया है। राजस्थान के पुष्कर में तो विदेशी नागरिकों को पैसे की कमी के कारण गाना गाकर व करतब दिखाकर भीख के सहारे अपना खर्च चलाना पड़ रहा है। पैसा न होने के कारण लोग अपने रिश्तेदारों का ईलाज नहीं करवा पा रहे हैं और यहां तक कि किसी मरीज की मृत्यु के बाद बिना पैसे मृतक का शव भी नहीं दिया जा रहा जिसका शिकार भाजपा के कद्दावार नेता सदानंद गौडा भी हो चुके हैं। खाते में पैसा होने के बावजूद मजबूर पिता अपनी बेटी की शादी के खर्च की तंगी से परेशान होकर आत्महत्या को मजबूर है। गरीब व मजदूर बेरोजगार हैं तथा औसतन 50 प्रतिशत व्यापार बंद है। विश्वबैंक के मुख्य अर्थशास्त्री कौशिक बसू ने अपने एक ट्वीट में यह दावा किया है कि विमुद्रीकरण का लाभों के मुकाबले नुकसान अधिक होगा। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एवं प्रमुख अर्थशास्त्री नोटबंदी को संगठित लूट करार दे चुके हैं व दावा कर रहे हैं कि भारत की जीडीपी 2 प्रतिशत नीचे जाएगी। पुलिस प्रशिक्षण में सिखाया जाता है कि 100 गुनाहगार चाहे बच जाएं किंतु एक निर्दोष नहीं फंसना चाहिए। मेडिकल साईंस के अनुसार भी अगर शरीर के किसी एक हिस्से पर चोट लगे या खराबी आ जाए तो इस तर्क के साथ कि मरीज का 1 से 6 प्रतिशत हिस्सा संक्रमित हो चुका है मरीज को जान से मार देना कहां की बुद्धिमानी है। नोटबंदी के समर्थन में निम्न तर्क दिए जा रहे हैं: 1. नोटबंदी से भ्रष्टाचार पर लगाम लगेगी 2. कालाधन बाहर आ जाएगा 3. शिक्षा सस्ती होगी 4. आम नागरिक प्लास्टिक करंसी को प्राथमिकता देगा 4. आतंकवाद का खात्मा होगा और 5. देश का गरीब अमीर हो जाएगा। किंतु देश में एक वास्तविकता यह भी है। भारत में विभिन्न बैंकों की 1 लाख 32 हजार 587 शाखाएं हैं। सामान्य औसत 9500 नागरिकों पर एक शाखा। वास्तविकता यह भी है कि भारत के 250 जिलों में केवल 100 शाखाएं हैं।

गाँवों में कुल 49902 शाखाएं हैं जबकि भारत की 69 प्रतिशत जनता गाँवों में रहती है। देश में कुल एटीएम 2 लाख 1 हजार 867 हैं जिनमें से 70 प्रतिशत मुख्यत: शहरों में हैं। 65 लाख बैंक ग्राहकों की जानकारी लीक हो जाना जनता के दिमाग में अभी ताजा है। देशी विदेशी अपराधी नित नए-नए हथकंडे अपनाकर अनेक बार आम और खास जनता से ठगी कर चुके हैं। जब भारत की 60 प्रतिशत जनता के खाते ही नहीं तो प्लास्टिक करंसी का सपना दूर की कौड़ी है। उल्टा ग्राहकों का बैंकों के प्रति अविश्वास बढ़ेगा। प्लास्टिक करंसी और विमूद्रीकरण के मामले में केवल ऑस्ट्रेलिया(आबादी छत्तीसगढ़ और झारखंड जैसे भारतीय राज्यों से भी कम ! सबसे बड़ी बात कि अगर ऑस्ट्रेलिया के साथ अनहोनी होती है तो अमेरीका सहित विश्व के सभी संपन्न देश उसकी सहायता को कतार में होंगे । मगर भारत की सहायता तो क्या टांग खींचने के लिए पूरा का विश्व तैयार हो जाएगा) ही ऐसा एकमात्र देश है जिसे इस अभियान में सफलता मिली है। बाकी सभी देशों(अधिकतर तानाशाही सरकारों वालों) को असफलता ही हाथ लगी है।

यूएसएसआर(वर्तमान में रुस) के मिखाइल गोर्बाच्योव ने 1991 में यह प्रयास किया था। नतीजा यह हुआ कि स्थिति सुधरने की बजाए यूएसएसआर के एक देश के बजाए 15 टुकड़े हो गए तथा नागरिकों के पास रुबल की बोरियां होने के बावजूद उन्हें एक किलो राशन नहीं मिल पा रहा था। एक हकीकत यह भी है कि इस निर्णय से पूर्व यूएसएसआर विश्व की दो महाशक्तिओं में से एक महाशक्ति था।

भारत में हालात यह हैं कि छोटे नोट लेने के लिए दबाव बनाकर मंदिरों की दानपेटियों को खुलवाया जा रहा है ताकि छुट्टे की समस्या को कम किया जा सके । जनता भीखारियों को मिली 200-300 की भीख को पाँच सौ में खरीदने को तैयार है। केवल 14 प्रतिशत की 100 या उससे कम की नकदी के सहारे इतनी बड़ी सनसनी फैलाई गई है। नतीजा जनता में 10 रुपए के सिक्कों के जाली होने की अफवाह फैली। बाज़ार से नमक व चीनी के गायब होने की अफवाह भी फैली। सर्वोच्च न्यायालय की तल्ख टिप्पणी आई कि इससे बाजारों में दंगे भड़क सकते हैं। बैंक कर्मियों सहित 70 से अधिक नागरिकों की मौत हो चुकी है व 1200 से अधिक घायल हो चुके हैं। बैंक कर्मियों के संगठन ने आरबीआई गवर्नर का इस्तीफा मांगा है। संसद के बाहर 200 सांसदों का प्रदर्शन हो चुका है। 28 नवंबर को विरोधी पार्टियां आक्रोश दिवस के रुप में

मना चुकी हैं। जम्मू-कश्मीर में एक के बाद तीन बैंक लूटे जा चुके हैं। असम में कैश वैन लूटी गई तथा कर्मियों को या तो मार दिया गया या घायल कर दिया गया। आतंकवादी जेल तोड़कर भागने आरंभ हो गए हैं। जनता पाई-पाई के लिए मोहताज है। नोटबंटी के 12 दिन बाद घटित इंदौर-पटना रेल हादसे के प्रभावितों को रेल्वे की ओर से सहायता स्वरुप 500 के पुराने नोट दिए गए मगर रिश्वतखोरों को नए नोटों में रिश्वत मिल रही है, सेना के साथ मुठभेड़ में मारे जा रहे आतंकवादियों से दो हजार के नए नोट बरामद हो रहे हैं, दो हजार के नकली नोट पकड़े जा रहे हैं। तो फिर चंद करोड़ की जाली करंसी और 6-10 प्रतिशत कालेधन (जिसमें सबसे अधिक विदेशों में होने का दावा है) के ईलाज के लिए देश-विदेश की 125 करोड़ से भी अधिक जनता को 50 दिन के लिए ही सही बेरोजगार करने का औचित्य क्या है।

मुझे आज भी याद है कि पंजाब में आतंकवाद के दौर में आतंकवादियों द्वारा यह कहकर आम जनता को भरमाया जाता था कि आप बाजार में फूलगोबी की एक ट्रॉली लेकर जाएंगे और वापस लौटते समय वह ट्रॉली नोटों से भरी होगी। हिंदु अमीरो की संपत्तियां तो चंद भ्रमित लोगों ने चिन्हित कर ली थीं जिन पर खालिस्तान बनने के बाद उनका कब्जा होने वाला था। नोटबंदी के फायदे गिनाते हुए यह ढिंढोरा पीटा जा रहा है कि इस कार्रवाई से गरीबी मिट जाएगी। झोंपड़ियों में रहने वाला गरीब महंगे अस्पतालों में ईलाज करा पाएगा और गरीब किसी भी महंगे स्कूल में जाएगा बहुत ही कम पैसे खर्च करके किसी अमीर की भांति अपने बच्चे को महंगे स्कूल में दाखिला दिला पाएगा क्योंकि जितने भी अमीर हैं उन के पास केवल कालाधन है और वह बाहर आ जाने पर उनके पास अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ाने तथा हस्पतालों में ईलाज कराने को बहुत कम पैसे बचेंगे। भारत में प्रजातंत्र है और प्रजातांत्रिक सरकार जनता की, जनता के लिए और जनता के द्वारा चुनी हुई सरकार है।

वर्तमान में बातें हो रही हैं रामराज्य की। हिंदु राजा की। राम भी तो राजा ही थे तो फिर प्रजातंत्र कहां फिट बैठता है। भारत की जनता को केवल राजा की प्रजा बनने की आदत है जिसे बदलना बहुत कठिन है। भारत में इंग्लैंड की परंपरा को सही साबित किया जा रहा है, राजा मर गया - राजा की उमर लंबी हो । भारत में चढ़ते सूर्य को सलाम करने की आदत है। इसलिए मौकापरस्त अपना किरदार बदलकर सूर्य डूब गया है - सूर्य की आयू **लंबी हो** का अनुसरण करके सरकार के आत्मघाती कदम की कमियां उजागर करने के बजाए

इस कदम का अंध समर्थन कर रहे हैं। यह आरबीई अधिनियम की धारा 24 और 26 को पूर्णरुपेण नहीं मानने का मामला भी है। न्याययालयों में नोटबंदी के विरुद्ध याचिकाएं आ रही हैं जिनमें से एक मद्रास हाईकोर्ट में दो हजार के नोट संविधान संशोधन किए बिना लाने पर ही उठाई जा रही है। विपक्ष तथा आमजन की ओर से यही प्रश्न किया जा रहा है कि अगर इतना बड़ा कदम उठाना था तो पूरी तैयारी क्यों नहीं की गई। रोज नई नई घोषणाएं की जा रही हैं जिससे मनोरंजन चैनलों के मुकाबले खबरिया चैनलों की टीआरपी बढ़ गई है।

दिनांक 28.11.2016 को लोकसभा में एक वित्त विधेयक प्रस्तुत किया गया है जिसके अनुसार आयकर अधिनियम में संशोधन प्रस्तावित है। स्वयं आय घोषित करने पर 50 प्रतिशत(30 प्रतिशत कर 33 प्रतिशत प्रभार व 10 प्रतिशत जुर्माना कुल 49.9 प्रतिशत) तक कर एवं जुर्माना लगेगा। 25 प्रतिशत चार साल तक बिना ब्याज सरकार के पास जमा रहेगा तथा 25 प्रतिशत की राशि तुरंत उपयोग की जा सकेगी। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना बनेगी जिसमें इस आयकर योजना का 25 प्रतिशत बिना ब्याज जमा रहेगा तथा 33 प्रतिशत प्रभार भी प्रधानमंत्री गरीब कल्याण में जाएगा और दावा है कि इस राशि को सिंचाई, आवास, शौचालयों, अवसंरचना, प्राथमिक शिक्षा, आजीविका आदि के लिए चलाए जा रहे गरीब कल्याण कार्यक्रमों के लिए किया जाएगा। अघोषित आय घोषित नहीं करने पर 85 प्रतिशत तक जुर्माना तथा सजा का प्रावधान है। इस पर जानकारों का मानना है कि अगर यही करना था तो देश-विदेश के नागरिकों को परेशान करने का औचित्य क्या है। अगर यह संशोधन पास होता है तो पहले समस्या यह उत्पन्न होगी कि आयकर स्वरुप जो राशि कंसोलीडेटिड फंड ऑफ इंडिया में जमा होने वाली थी सीधे प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना में कैसे चली जाएगी और यदि कर एजेंसिया नागरिकों पर सख्ती करती है तो यह 25 साल बाद वैश्वीकरण और उदारीकरण काल में इंस्पेक्टर राज की वापसी की सनसनी मानी जाएगी। पंजाब में एक कहावत है जो इस दौर पर सटीक बैठती है – **बुवे आई जंज ते विन्नो कुड़ी दे कन्न** अर्थात जब लड़की की बारात दरवाजे पर पहुंच जाती है तो लड़की के कानो में झुमके आदि पहनाने के लिए लड़की के कानों को छेदना आरंभ किया जाता है। नित नई-नई घोषणाओं और रोज बदलते नियमों से तो यही अभिप्रेत है।

मुद्दे की बात यह है कि सरकार की इस कार्रवाई के उपरांत भारत का कोई भी नागरिक(पक्ष में या विपक्ष में) सरकार के इस निर्णय का विरोध करने की हिम्मत नहीं कर सकता। प्रत्येक समझदार व्यक्ति यह जानता है कि अगर जनता में जरा सा भी भ्रम फैला तो देश बर्बाद हो सकता है। इसलिए सरकार, विपक्ष और आमजन सबकी जिम्मेदारी बनती है कि स्पष्टत: सरकार के इस निर्णय का समर्थन करें। मगर मीडिया ने समर्थन दिखाने के लिए हजारों गरीबों, मजदूरों, छोटे व्यापारियों और गृहणियों को अर्थशास्त्री बना दिया है। सरकार का समर्थन कर रहे अर्थशास्त्री तथा प्रधानमंत्री स्वयं कह रहे हैं कि इस निर्णय का कुछ समय के लिए ही सही प्रतिकूल प्रभाव तो होगा ही। वर्तमान में अगर कुछ मीडिया हाऊसों का बस चले तो अपनी सूर्यभक्ति दिखाने के लिए मुर्दे से भी कहलवा दें कि उनके जिंदा रिश्तेदार परेशान नहीं है। प्रधानमंत्री ने अपनी मन की बात में सूरत की दीक्षा परमार की शादी की तारीफ करते हुए कहा कि उसने तथा उसके परिवार ने मेहमानों को चाय व पानी पिलाकर शादी की। मगर अपने प्रमुख साथियों कर्नाटक के पूर्व मंत्री के.जनार्दन रेड्डी और गुजरात के पूर्व डीआईजी डीजी बंजारा की ओर से अपने बच्चों की शाही शादियों की आलोचना नहीं की (इन शादियों का संदर्भ लेना इसलिए जरुरी है कि यह दोनो सालोंसाल जेल में रहकर भी शाही जीवन जी सकते हैं)। प्रयास सभी ओर से होना चाहिए केवल किसी एक ओर से नहीं। नोटबंदी की घोषणा के बाद से प्रधानमंत्री एक विदेशयात्रा कर चुके हैं तथा तीन बड़ी रैलियां। सोचना यही है कि जब देश में कुल करंसी का 14 प्रतिशत से भी कम है तो इतने शाही खर्च कहां से ? यदि बराबरी नहीं होगी तो मेरा यह विषय नोटबंदी स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी मानवीय सनसनी सार्थक होने वाला है। यह निर्णय देशहित की बजाए केवल राजनैतिक ही माना जाएगा।

विजय कुमार शर्मा

सहायक निदेशक राजभाषा

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन

भारत में हिंदी की दशा और दिशा

भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी भाषा को भारत की राजभाषा के रुप में स्वीकार किया। इसी उद्देश्य से 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रुप में मनाया जाता है। संविधान के अनु. 351 में हिन्दी भाषा के विकास हेतु स्पष्ट उल्लेख है कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ावे, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना आंठवी अनुसूची में विर्निष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रुप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक और वांछनीय हो वहाँ शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए इसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी रहेगी। अनुच्छेद 343 (2) में संविधान के क्रियाशील होने से 15 वर्ष तक के लिए अंग्रेजी के प्रयोग को अधिकृत किया गया था। अनुच्छेद 343 (3) में संसद को उक्त अवधि के बाद भी अंग्रेजी के प्रयोग को अधिकृत करने हेतु विधि निर्माण का अधिकार दिया गया था। परन्तु देश को पराधीनता से मुक्त हुए 71 वर्ष व्यतीत होने के बाद भी भाषाई गुलामी से हमारा देश आज भी परतंत्र है।

भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ विभिन्न संस्कृति, धर्म, जाती, भाषा - भाषी लोग रहते हैं तथा अपनी-अपनी परंपरा, धर्म और भाषा को ही सर्वोपरि मानते हैं। इसी धर्म, जाति और भाषा के नाम पर अक्सर लोग झगड़ते भी रहते हैं। ऐसे में हिंदी, जो देश की राष्ट्रभाषा है, उसकी दशा और दिशा का अनुमान सहजता से लगाया जा सकता है।

हमारी सुबह गुड मार्निंग से शुरू होती है और रात्री गुड नाइट पर समाप्त होती है। किसी से गलती हो जाए तो हम धडल्ले से सॉरी बोलते हैं न की माफ कीजिए। गुस्सा आने पर भी हम ज्यादातर अंग्रेजी के शब्दों का ही इस्तेमाल करते हैं जैसे- नॉनसेंस, इडियट, गेट आउट अथवा गेट लॉस्ट आदि। आज हमारे समाज में अंग्रेजी बोलने वालों को स्मार्ट, बुद्धिमान एवं प्रतिष्ठित माना जाता है और हिंदी बोलने वालों को अनपढ़, गंवार समझा जाता है। हम अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूल में भेजने के लिए पूरी चोटी का जोर लगा देते है और अपनी शान समझते हैं। ऐसी स्थिति में जब हम अपनी मातृभाषा भी बच्चों को सिखाने में हिचकिचाते हैं तो फिर हम कैसे कह सकते हैं कि यह वही देश है

जहाँ की 90 प्रतिशत जनता हिन्दी बोलती और समझती है और जो हमारी राष्ट्रभाषा है।

मेरे विचार से आज हिंदी की यही वर्तमान दशा है जहाँ हिंदी अपनाने में लोग झिझक रहे हैं। आज हिंदी पग-पग पर उपेक्षित हो रही है। जिस भाषा को अंग्रेजों ने हमारे ऊपर थोपा, उसे आज भी बड़े शौक से अपनी दिनचर्या में उतारे बैठे है। इसका कारण यह है कि आज भी हम अपने-अपने प्रांतीय भाषा को श्रेष्ठ तथा जाति और धर्म को सर्वोपरि मानते है और इसके लिए झगड़ते रहते हैं और अंग्रेजी हमारे देश की किसी भी प्रांत की भाषा न होने के कारण हम सहजता से इसे अपनाने लगे हैं, क्योंकि अंग्रेजी को लोगों ने सहजता से एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपना लिया है। इस दशा में हिंदी को क्या दिशा मिल सकती है, यह सहजता से अनुमान लगाया जा सकता है।

जब भी हिन्दी दिवस आता है तो सरकारी कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा, सप्ताह का आयेजन कर, हिन्दी पर लम्बे – लम्बें भाषण देकर, प्रतियोगिता आयोजित कर कुछ लोगों को हिन्दी के नाम पर सम्मान, इनाम देकर इतिश्री कर ली जाती हैं। हिन्दी पखवाड़ा, सप्ताह समाप्त होते ही हिन्दी को वर्ष भर के लिये विदा कर देते हैं। यह बात यहीं तक सीमित नहीं है। सरकारी कार्यालय में हिंदी के प्रयोग संबंधी जाँच-बिंदु स्थापित किए जाते हैं और मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति हेतु आदेश, परिपत्र भी नियमित रूप से जारी किए जाते हैं परन्तु आज भी हम हिंदी को पूरी तरह से अपना नहीं पाए हैं।

इस बदलते परिवेश में यहां अंग्रेजी के दो-चार शब्द बोल देना बुद्धिमत्ता की पहचान बन गई है। अंग्रेजी आती हो या नहीं, इसे कोई मतलब नहीं। आज स्मार्टफोन में भी कई भाषाओं का विकल्प है परन्तु सोशियल मीडिया में भी हम अंग्रेजी में ही मेसेज करते हैं, चाहे वाट्सएप हो अथवा ट्विटर। इसी कारण आम आदमी अपनी संस्कृति व सभ्यता से कोसों दूर होता जा रहा है। तुष्टिकरण की नीति से कभी भी हिन्दी का विकास यहां संभव नहीं दिखाई देता। हिन्दी हमारी दोहरी मानसिकता का शिकार हो चुकी है। जिसके कारण यह राष्ट्रीय स्वरूप को उजागर कर पायेगी, कह पाना मुश्किल है। यह हमारे देश में हिन्दी की दशा है। जैसी दशा होगी, वैसी दिशा भी होगी। यहीं कारण है कि हिन्दी इस देश की आज तक सही मायने में राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई।

जनसंचार माध्यमों , प्रिन्ट, दृश्य एवं श्रव्य की भूमिका हिन्दी प्रचार प्रसार में सदा महत्वपूर्ण रही है। आज हिंदी के विकास में देश के विभिन्न अंचलों से हजारों पत्र-पत्रिकाएं सक्रिय भूमिका निभा रही है। अनेक हिंदी समाचार पत्र जहां लाखों पाठकों के घर-घर पहुंच रहे हैं, वहीं हिंदी सिनेमा, मीडिया, मीडिया नेटवर्क जैसे इलैक्ट्रानिक संसाधनों के माध्यम से पूरे देश में हिंदी संवाद को स्थापित करने में सक्रिय भूमिका निभा रही है।

आज विश्व स्तर पर हिन्दी फैल तो रही है पर अपने ही घर में उपेक्षित जिंदगी जी रही है। यहीं हिन्दी की वर्तमान दशा भी है, दिशा भी जिसे राष्ट्रहित में अनुकूल बनाना बहुत जरूरी है।

महात्मा गाँधी ने भी कहा था, कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। राष्ट्रभाषा राष्ट्र की आत्मा होती है। राष्ट्र भाषा सम्पूर्ण देश में सांस्कृतिक और भावात्मक एकता स्थापित करने का प्रमुख साधन है। राष्ट्रभाषा ही किसी राष्ट्र की पहचान होती है जिसमें पूरा देश संवाद करता है। यह तभी संभव है जब सभी भारतवासी अपनी जाति, धर्म और भाषा की दोहरी मानसिकता को पीछे छोड़कर राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपने जीवन में अपनाएँ और हिन्दी का राष्ट्रीय स्वरूप उजागर करने में एकजुट होकर आगे आएं, जिसमें देश की एकता अस्मिता समाहित है।

हिन्दी भाषा हमारे माथे की बिन्दी स्वरुप है इसी से जन जीवन में समरसता और संवाद में सहजता का प्रादुर्भाव होगा, दूरियाँ समाप्त होगी तथा नजदीकियों को विस्तार मिलेगा।

आओ प्रेम से अपनाएं, अपनी भाषा हिंदी,
शिखर पर पहुँचाएं इसे, बनाकर माथे की बिंदी।
यही कामना करें हम, कि न करे विदेशी भाषा की गुलामी,
श्रद्धापूर्वक करें आह्वान, हर एक के हृदय में बसाएं हिंदी।।

जय हिंद ..... जय हिंदी.....।

नमिता कर
वरिष्ठ अनुवादक
मुख्य आयुक्त कार्यालय,
सीजीएसटी, केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क,
राजस्व भवन, राजस्व विहार, भुवनेश्वर-751007.

मुस्कानों से

पीड़ा का मत राग अलापो
कान पक चुके सुनते-सुनते|
सूरज कभी नहीं थकता है,
रोज रौशनी बुनते-बुनते |

भीतर- भीतर साल रहा जो
अँधियारा है इसको मानो |
सफल हुए वे भी बदले हैं,
पात सरीखे झरते- उगते |

भरी दुपहरी हवा बिदक कर
अगर घूमने नहीं निकलती |
हाल न सारा मालूम होता
दरवाजे के खुलते- खुलते |

मन में उमड़े तूफानों से
नींद उड़ गई कहीं फुर्र – से,
सारी रात कटी आँखों में,
अंधियारे के ढलते-ढलते |

अगणित इच्छाओं को धरकर
जीना भी कोई जीना है |
किसी तरह से पूरी कर लो ,
रहो न आँखे मलते-मलते |

सुख-दुःख के इस महासमर में
हंसने का भी वक्त निकालो
मुस्कानों से पहुँच सकोगे ,
मंजिल तक तुम चलते-चलते |

श्रद्धा आचार्य
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिन्दी)

हिन्दी हमारी भाषा है

जिसके शब्द-शब्द में बहती है गंगा की धारा,
जिसके कारण देश हमारा लगता हमको प्यारा |
हिमगिरि के उत्तुंग शिखर से सागर की लहरों तक
प्रथम रश्मि से अस्ताचल तक, गाँवों से शहरों तक
जो देती हमें दिलासा है, वह हिन्दी हमारी भाषा है |

सत्यमेव जयते की वाणी, ज्ञानदायिनी है कल्याणी,
कोटि-कोटि मुखारविंद में शोभित है हिन्दी पटरानी |
कला और साहित्य से पूरित, संस्कृतियों से ओतप्रोत है,
आज देश के जन-जन की भाषा हिन्दी प्रेरणास्रोत है |

इस भाषा की इतनी क्षमता, जितनी है माता की ममता,
और नहीं कोई दूजी भाषा, जो कर सके हिन्दी से समता |
भाव सभी यह भर लेती है, सबको अपना कर लेती है
इससे है भारत को आशा, हृदयग्राहिणी हिन्दी भाषा |

राजकाज में सबसे आगे, संविधान में सरपट भागे,
शिक्षा,यंत्र,चिकित्सा की हो, इसमें कहीं विराम न लागे |
तुलसी,सूर, जायसी,मीरा, रोली.चन्दन और अबीरा ,
कथा,कहानी, नाटक,रचना,प्रेमचंद,रसखान, कबीरा |
अंतरिक्ष तक ज्योतित जिसकी परिभाषा है ,वह हिन्दी हमारी भाषा है |

श्रद्धा आचार्य
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, खोरधा रोड

मेरी अभिलाषा

उड़ाने तो खूब देखी होंगी सबने,

पर मैं ,मैं तो एक अनोखी उड़ान भरना चाहती हूँ।

मैं जानती हूँ कि रास्ते पर खतरे, मुसीबतें तो बहुत हैं,

पर इन सबका साहस से सामना करना चाहती हूँ मैं।

खेलना, खाना, पढ़ना बस

इसी मे सब उलझे हुए हैं,

पर मैं ,मैं तो एक अनोखी उड़ान भरना चाहती हूँ।

अरे कुछ तो अलग करके दिखाना चाहती हूँ मैं,

उड़ान तो सब भरते हैं पर कुछ अलग उड़ान भरना चाहती हूँ।

ज़िंदगी में आगे बढ़ने के रास्ते तो बहुत हैं,

पर मदर टेरेसा बनना चाहती हूँ मैं।

वैसे तो सपने बहुत है मेरे,

सफलताओं को हासिल करना चाहती हूँ मैं।

मेरे देश के लोगों कि मुस्कान बनना चाहती हूँ मैं,

मैं नन्ही सी गुड़िया एक ऊंची उड़ान भरना चाहती हूँ।

प्रणति सुबुद्धि

स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिंदी)

"राष्ट्रीय कार्य के लिए भी हिंदी आवश्यक है। इस भाषा से देश की उन्नति होगी।"

-रवीन्द्रनाथ ठाकुर

वस्तु एवं सेवाकर- एक देश-एक कर-एक बाजार-

भारत के कर संबंधी ढांचे में सबसे बड़ा सुधार

वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) पूरे देश भर में 1 जुलाई 2017 को लागू किया गया। इसे संसद के सेंट्रल हॉल में जून 30, 2017 की अर्धरात्रि के 12 बजे पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने एक विशेष समारोह में घंटी बजाकर देश भर में जीएसटी लागू होने की घोषणा की।

जीएसटी अप्रत्यक्ष कर की श्रेणी में आता है। जीएसटी संपूर्ण भारत में वस्तुओं और सेवाओं पर लगाया जानेवाला एकल राष्ट्रीय कर है। पूर्व कर प्रणाली, वैट केवल वस्तुओं पर ही लागू होता रहा है और तब की यह अप्रत्यक्ष कर प्रणाली, आपूर्ति श्रृंखला के विभिन्न स्तरों पर केंद्र और राज्यों द्वारा लगाई जानेवाली बहु-स्तरीय करों में फँसी हुई थी, जैसे अबकारी कर, केन्द्रीय विक्रय कर, मूल्य वर्धित कर इत्यादि। देश के विभिन्न राज्यों में वैट कर भिन्न-भिन्न हुआ करता था। इसके कारण एक उत्पाद का मूल्य विभिन्न राज्य में भिन्न-भिन्न हुआ करता था।

वस्तु एवं सेवाकर, पूरे देश में निर्मित उत्पादों और सेवाओं के विक्रय एवं उपभोग पर लागू किया गया है। इसका उद्देश्य राज्यों के बीच वित्तीय बाधाओं को दूर करके देश भर को एक समान बाजार में बांध कर रखना है। जीएसटी में सभी प्रकार के कर एक एकल शासन के तहत सम्मिलित हो गए हैं। इसमें सेल्स टैक्स, सर्विस टेक्स, एक्साईज ड्यूटी, वैट आदि तमाम तरह के कर को हटा दिया गया है। इससे पूरा देश एकीकृत बाजार में बदल गया है। पूरे देश में किसी भी सामान की कीमत अब एक ही होगी।

जीएसटी कैसे काम करेगी ?

जीएसटी त्रिस्तरीय- सीजीएसटी, एसजीएसटी एवं आईजीएसटी कर ढांचा है जो केंद्रीय, राज्य एवं अंतर्राज्यीय व्यापार पर आधारित है।

सीजीएसटी- जहां केन्द्र सरकार द्वारा राजस्व एकत्र किया जाएगा।

एसजीएसटी- जहां राज्यों में बिक्री के लिए राज्य सरकारों द्वारा राजस्व एकत्र किया जाएगा।

आईजीएसटी-जहां अंतर्राज्यीय बिक्री के लिए केन्द्र सरकार द्वारा राजस्व एकत्र किया जाएगा।

ज्यादातर मामलों में कर संरचना निम्नानुसार होगी:-

लेन-देन	नई प्रणाली	पुरानी व्यवस्था	व्याख्या
राज्य के भीतर बिक्री	सीजीएसटी + एसजीएसटी	वैट + केंद्रीय उत्पाद शुल्क/ सेवा कर	राजस्व अब केंद्र और राज्य के बीच साझा किया जाएगा
दूसरे राज्य को बिक्री	आईजीएसटी	केंद्रीय बिक्री कर + उत्पाद शुल्क/ सेवा कर	अंतर्राज्यीय बिक्री के मामले में अब केवल एक प्रकार का कर (केंद्रीय) होगा।

उदाहरण:

महाराष्ट्र में एक व्यापारी ने 10,000 रुपये में उस राज्य में उपभोक्ता को माल बेच दिया। जीएसटी की दर 18% है जिसमें सीजीएसटी 9% की दर और 9% एसजीएसटी दर शामिल है। ऐसे मामलों में डीलर 1800 रूपए जमा करता है और इस राशि में 900 रुपए केंद्र सरकार के पास जाएंगे और 900 रुपए महाराष्ट्र सरकार के पास जाएंगे। इसलिए अब डीलर को आईजीएसटी के रूप में 1800 रूपये चार्ज करना होगा। अब सीजीएसटी और एसजीएसटी को भुगतान करने की आवश्यकता नहीं होगी।

कर निर्धारण हेतु जीएसटी परिषद का भी गठन किया गया है जिसके अध्यक्ष केंद्रीय वित्त मंत्री हैं। जीएसटी के अंतर्गत कई बातों को माना गया है। सेवाओं के लिए टैक्स की दर 14 फीसदी और वस्तु के लिए टैक्स की दर अलग-अलग है। एक मजबूत और व्यापक सूचना प्रायोगिक प्रणाली भारत में जीएसटी व्यवस्था की नींव है इसलिए पंजीकरण, रिटर्न, भुगतान आदि जैसी सभी कर भुगतान सेवाएं कर दाताओं को ऑनलाईन उपलब्ध होगी। जीएसटी यह सुनिश्चित करता है, कि अप्रत्यक्ष कर दरें और ढाँचे पूरे देश में एक समान है। इससे निश्चितता में तो बढ़ोत्तरी होगी, भारतीय वस्तुओं और सेवाओं की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में होनेवाली प्रतिस्पर्धा में बढ़ोतरी होगी और व्यापार करना आसान हो जाएगा। साथ ही यह सुनिश्चित होगा कि करों पर कम से कम कराधान हो, जिससे व्यापार करने में आनेवाली छुपी हुई लागत कम होगी। व्यापार करने में लेन-देन लागत घटने से व्यापार और उद्योग के लिए प्रतिस्पर्धा में सुधार को बढ़ावा मिलेगा।

जीएसटी- गंतव्य आधारित

पूरे विनिर्माण श्रृंखला के दौरान होने वाले सभी लेनदेन पर जी एस टी लगाया जाता है। इससे पहले, जब एक उत्पाद का निर्माण किया जाता था, तो केंद्र विनिर्माण पर उत्पाद शुल्क या एक्साइस ड्यूटी लगाता था | अगले चरण में, जब आइटम बेचा जाता है तो राज्य वैट जोड़ता है। फिर बिक्री के अगले स्तर पर एक वैट होता था। परंतु जीएसटी में अब ऐसा नहीं है, उदाहरणस्वरूप- मान लें कि पूरे निर्माण प्रक्रिया राजस्थान में हो रही है और कर्नाटक में अंतिम बिक्री हो

मिलेगा | लेकिन जब उत्पाद राजस्थान से बाहर हो जाता है और कर्नाटक में अंतिम उपभोक्ता तक पहुंच जाता है तो राजस्थान को राजस्व नहीं मिलेगा | इसका मतलब यह है कि कर्नाटक अंतिम बिक्री पर राजस्व अर्जित करेगा, क्योंकि यह गंतव्य-आधारित कर है |

उत्पाद शुल्क, बिक्री कर, सेवा कर जीएसटी मे समाहित होने के कारण, घरेलू एवं दैनिक उपयोग की वस्तुओं के मूल्यों मे कमी आई है। इससे उपभोग में वृद्धि हुई है फलस्वरूप उत्पादन, विनिर्माण उद्योग एवं विदेशी निवेश में वृद्धि होगी जिससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। वहीं एक ही व्यक्ति या संस्था पर कई बार टैक्स लगाने की जरूरत नहीं पडेगी, सिर्फ जीएसटी से सभी टैक्स वसूल कर लिए जायेंगें।

जीएसटी में कुल तीन तरह के टैक्स है । इस ढांचे के तहत पूरे देश में माल बेचने या फिर उसकी सप्लाई करने वालों को हर राज्य में तीन अलग-अलग रजिस्ट्रेशन कराने होगें और अलग-अलग रिटर्न भरते हुए टैक्स का हिसाब रखना होगा । अगर कोई कंपनी अलग-अलग तरह के कारोबार करती है तो उसे हर कारोबार का अलग रजिस्ट्रेशन कराना होगा ।

उपभोक्ता के लिए लाभ

केंद्र और राज्यों द्वारा लगाए गए बहल करों या मूल्य संवर्धन के प्रगामी के अधीन विनिर्माता से लेकर उपभोक्ताओं तक केवल एक ही कर लगेगा, जिससे अंतिम उपभोक्ता पर लगने वाले करों में पारदर्शिता को बढ़ावा मिलेगा। निपुणता बढ़ने और कदाचार पर रोक लगने के कारण अधिकांश उपभोक्ता वस्तुओं पर समग्र कर भार कम होगा, जिससे उपभोक्ताओं को लाभ होगा।

केंद्र और राज्य सरकारों के लिए लाभ

केंद्र और राज्य स्तर के बहुआयामी अप्रत्यक्ष करों को जीएसटी लागू करके हटाया गया है । मजबूत सूचना प्रौद्योगिकी प्रणाली पर आधारित जीएसटी केंद्र और राज्यों द्वारा अभी तक लगाए गए सभी अन्य प्रत्यक्ष करों की तुलना में प्रशासनिक नजरिए से बहुत सरल और आसान है, जीएसटी से बेहतर कर अनुपालन परिणाम प्राप्त होगें। जीएसटी से सरकार के कर राजस्व की वसूली लागत मे कमी आने की उम्मीद है । इसीलिए इससे उच्च राजस्व निपुणता को बढ़ावा मिलेगा ।

छात्र, संकाय और कर्मचारियों

छात्रों, संकाय और वहां के कर्मचारियों को एक शैक्षिक संस्थान द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं को जीएसटी से बाहर रखा गया हैं। वार्षिक उपदान या छात्रावास के लिए छात्रों से शैक्षणिक संस्थान द्वारा आवास और बोर्डिंग के रूप में शुल्क पर जीएसटी नहीं लगाया गया है।

उत्पादनकारी राज्य

सब राज्य परस्पर निर्भरशील हैं । ओडिशा से लोहा, एल्युमिनियम, खनिज पदार्थ आदि दूसरे राज्य को जाते हैं तो वहां के उत्पादित सामग्री ओडिशा को आता है । जीएसटी नीति के अंतर्गत यह होता है कि जिस राज्य का द्रव्य या सेवा व्यवहार उपयोग होता है, उस राज्य को कर मिलेगा । ओड़िशा में स्टिल, एल्युमिनियम, लोहा इत्यादि का उत्पादन होता है । जीएसटी के पहले यह सब सामान अन्य राज्य को बिक्री होता था तो ओडिशा राज्य केन्द्रीय बिक्री कर आदाय करता था । अब केन्द्रीय बिक्री कर जीएसटी में मिल गया है । अब जीएसटी लागू होने के बाद एलयुमिनियम बेचा गया तो

जीएसटी आदाय करेगा और केंद्र सरकार के अकाउंट में जमा कर देगा। इस प्रकार उत्पादन करने वाले राज्य को कर नहीं मिलेगा। जीएसटी लागू होने के बाद, राज्यों को मिलने वाला वैट, मनोरंजन कर, लग्जरी कर, लॉटरी कर, एंटरी कर आदि खत्म हो गया है।

जीएसटी लागू होने से पहले दाल जातीय द्रव्य, धान, चावल, आलू, आटा, मैदा, सूजी जैसी खाद्य सामग्री पर 5 प्रतिशत कर लगता था किंतु अब जीएसटी लागू होने के बाद इन खाद्य सामग्रियों को कर परिसर से वाद् दिया गया है ।वहीं इन सामग्रियों को पॉकेट करके पंजीकृत मार्का में विक्रय करने से 5 प्रतिशत कर लागू किया गया है।

हालांकि इतने बड़े आर्थिक सुधार को अमल करने मे कुछ मुख्य चुनौतियाँ भी है जैसे – आरम्भिक वर्षों मे राज्यों के राजस्व कमी की क्षतिपूर्ति, विवाद निस्तारण, नई कर प्रणाली का कर्मचारियों को प्रशिक्षण, थ्रेसोल्ड लिमिट निर्धारण। जीएसटी लागू होने से कुछ सेवाएं जैसे दूरसंचार सेवाएं, बैंकिग एवं वित्तीय सेवाएं, वायुयान सेवाएं, पार्लर महंगे हुए है तथा अंतर्राज्यीय व्यापार शुल्क घटने से व्यवसायी तथा निवेशक क्षेत्रीय सुगमता को महत्व दे रहें हैं न कि क्षेत्रीय विकास व स्थानीय रोजगार को। फिर भी वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारतीय अर्थव्यवस्था की पहचान बनाने तथा व्यापारिक सुगमता हेतु ऐसा प्रभावकारी परिवर्तन अत्यावश्यक है।

जीएसटी के प्रचलन से कई विशेषज्ञ भविष्य में देश में शिल्प और अर्थनैतिक अवस्था में सुधार की आशा जगाते हैं तो कई आशंका सृष्टि करते हैं। उनकी आशंका का कारण है जीएसटी के प्रचलन से छोटे व्यापारियों को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, उत्पादनकारी राज्यों को क्षति हो रही है। व्यापारियों को दो से तीन महिने का वक्त जीएसटी के अनुकूल बनने में लगा है तथा उनकी शंकाएं, भ्रम और व्यस्तता बनी हुई है। हिसाब-किताब से लेकर हर महीने रिटर्न दाखिल करने की बाध्यता से उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इन व्यापारियों के लिए जीएसटी की छूट यह है कि, केवल डेढ़ करोड टर्न ओवर वाले व्यापारियों को अब तिमाही रिटर्न भरना होगा। नितप्रति व्यवहार की कुछ सामग्री पर 5 प्रतिशत कर और अन्य करों का ह्रास 12 प्रतिशत, 18 प्रतिशत एवं 28 प्रतिशत किया गया है, किंतु सोना, चांदी जैसी मूल्यवान और विलासपूर्ण सामग्री पर कर ह्रास मात्र 3 प्रतिशत है। सोने, चांदी के अलंकार अत्यावश्यक पदार्थ तो नहीं होते, किंतु एक आवश्यक पदार्थ जरूर है। एक गरीब आदमी भी अपनी लड़की अथवा लड़के की शादी में कुछ सोने अथवा चांदी के अलंकार खरीदता है। सामाजिक अथवा धार्मिक कार्यों में भी यह खरीदा जाता है। इन बहुमुल्य पदार्थों पर अधिक कर रखने से कर चोरी का डर रहता है इसीलिए हमेशा इन द्रव्यों पर कम कर रखा गया है। सोना अथवा चांदी पर उत्पादन राज्य का 1 प्रतिशत कर था, ओडिशा में 1 प्रतिशत प्रवेश कर एवं केन्द्रीय सरकार 1 प्रतिशत उत्पाद शुल्क भी लेते थे। कुल मिलाकर सोने या चांदी या अलंकार पर 3 प्रतिशत कर अदाय होता था और अब यह 3 प्रतिशत कर जीएसटी में रखा गया है।

अवश्य जीएसटी व्यवस्था में स्थिरता लाने के लिए और इसके अच्छे परिणाम में थोड़ा समय लगेगा। किसी भी बड़े परिवर्तन के बाद साधारण जनता की आशा-आलोचना बढ़ जाती है। फिर भी सरकार द्वारा अच्छी रणनीति एवं न्यायिक व्यवस्था द्वारा इसे सुचारू रूप से व्यावहारिक बनाया जा सकता है।

दीप्ति साहु
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्या.प्रमुआआ, भुवनेश्वर

विश्व हिंदी सम्मलेन – 2018 – एक झलक

पुरे विश्व के हिंदी से जुड़े लोगों को एक मंच पर लाने एवं हिंदी के विभिन्न आयामों के प्रचार प्रसार हेतु 11वें विश्व हिंदी सम्मलेन का आयोजन 18 से 20 अगस्त 2018 को गोस्वामी तुलसीदास नगर मॉरिशस में किया गया| इस सम्मलेन का आयोजन मुख्य रूप से भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा किया गया जिसमें इस बार मॉरिशस सरकार स्थानीय आयोजनकर्ता थी| 18 अगस्त 2018 को पूर्वाह्न 10:00 बजे मॉरिशस के राजधानी पोर्ट लुइस के गोस्वामी तुलसीदास नगर स्थित स्वामी विवेकानंद अन्तराष्ट्रीय सभागार में भारत सरकार के विदेश मंत्री माननीय श्रीमती सुषमा स्वराज एवं मॉरिशस सरकार के शिक्षा मंत्री माननीय श्रीमती लीला देवी दुकन लछुमन ने द्वीप प्रज्वलन कर विश्व हिंदी सम्मलेन का उद्घाटन किया| उद्घाटन सत्र के आरम्भ में दिवंगत राजनेता श्री अटल बिहारी वाजपयी को श्रद्धांजलि दी गयी और दो मिनट का मौन रखा गया| उद्घाटन समारोह में केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के विदेशी छात्रों द्वारा सरस्वती वंदना किया गया और उसके पश्चात महात्मा गाँधी हिंदी संस्थान मॉरिशस के छात्रों द्वार हिंदी गान प्रस्तुत किया गया| इस अवसर पर मॉरिशस के माननीय प्रधानमंत्री श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ ने विश्व हिंदी सम्मलेन पर दो डाक टिकट जारी किये और सम्मलेन स्मारिका को लोकार्पण किया|

फोटो 1: विश्व हिंदी सम्मेलन लोगो

उद्घाटन समारोह में स्वागत भाषण माननीय श्रीमती लीला देवी दुकन लछुमन ने दिया और सम्मलेन प्रस्त्वाना माननीय श्रीमती सुषमा स्वराज जी ने रखा | श्रीमती स्वराज जी ने कहा कि इस सम्मलेन में माननीय श्री अटल बिहारी वाजपयी के निधन से शोक का भाव उभर रहा है पर इस बात से संतोष है कि आज सम्पूर्ण हिंदी विश्व श्री अटल जी को श्रद्धांजलि देगा | उनका कहना था कि पहले के सभी हिंदी सम्मलेन साहित्य के विधाओं पर केन्द्रित थे, पर दसवें विश्व हिंदी सम्मलेन से इसकी मुख्य विधा भाषा को बनाया गया जिसका मुख्य उद्देश्य भाषा और बोली जहाँ बची है वहां बढ़ाया जाय एवं जहाँ लुप्त हो रही है, वहां बचाया जाय| इसमें भारत को प्रमुख भूमिका अदा करनी होगी | दसवें विश्व हिंदी सम्मलेन के अनुशंसाओं पर 'भोपाल से मॉरिशस' शीर्षक से पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया है | उन्होंने कहा कि हर विश्व हिंदी सम्मलेन में दो प्रस्ताव पारित किये जाते रहे हैं और उनका अनुपालन सुनिश्चित किया जाता है | उन्होंने कहा कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ कि आधिकारिक भाषा बनाने में समस्या यह है कि इस भाषा से सम्बंधित व्यय समर्थक देशों को वहन

करना होगा| उन्होंने उम्मीद जताई कि इसके लिए हम 129 देशों का समर्थन हासिल कर लेंगे एवं आग्रह किया कि संयुक्त राष्ट्र संघ से हर शुक्रवार को प्रसारित होने वाली हिंदी विश्व समाचार को अधिक से अधिक सुना जाय ताकि उसे दैनिक करने कि राह आसान हो | श्रीमती स्वराज कहा कि भाषा को संस्कृति से जोड़ा जाय, इसलिए 11 वें विश्व हिंदी सम्मलेन का मुख्य विषय "हिंदी विश्व और भारतीय संस्कृति" रखा गया | वह इस बात से प्रसन्न थी कि गिरमिटिया देशों में संस्कृति का गौरव कायम है| सम्मलेन के 11 वें विश्व हिंदी सम्मलेन के लोगो पर बने एनिमेशन फिल्म का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि जिस तरह फिल्म में दिखाया गया है कि भारत का राष्ट्र पक्षी मोर मॉरिशस के पक्षी डोडो को डूबने से बचा लेता है उसी तरह गिरमिटिया देशों में संस्कृति को बचने कि जिम्मेवारी भारत की है|

इस अवसर पर गोवा की राज्यपाल माननीय श्रीमती मृदुला सिन्हा ने विश्व हिंदी सम्मलेन पर प्रकाशित 'गगनांचल' के विशेषांक का, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल माननीय श्री केसरी नाथ त्रिपाठी ने 'दुर्गा ' पत्रिका का, भारत सरकार की विदेश मंत्री माननीय श्रीमती सुषमा स्वराज ने 'राजभाषा भारती' पत्रिका के विशेषांक का, मॉरीशस सरकार की शिक्षा मंत्री माननीय श्रीमती लीला देवी दुकन लछुमन ने विश्व हिंदी सचिवालय की पत्रिका 'विश्व हिन्दी साहित्य' पत्रिका का, भारत सरकार के विदेश राज्य मंत्री माननीय श्री एम.जे. अकबर ने अभिमन्यु अनत की पुस्तक 'प्रिया' का और भारत सरकार के विदेश राज्य मंत्री माननीय जनरल वी. के. सिंह ने 'भोपाल से मॉरीशस तक' पुस्तक का लोकार्पण किया । उद्घाटन समारोह में धन्यवाद ज्ञापन जनरल वी. के. सिंह ने दिया |

फोटो 2 - उद्घाटन समारोह

श्री अटल बिहारी वाजपयी को श्रद्धांजलि:

उद्घाटन समारोह के पश्चात दिवंगत नेता श्री अटल बिहारी वाजपयी जी के स्मृति में श्रद्धांजलि सत्र का आयोजन किया गया जिसका संचालन मशहूर कवि श्री अशोक चक्रधर ने किया| इसमें वरिष्ठ कवि एवं पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री केसरी नाथ त्रिपाठी ने कहा कि श्री अटल जी के निधन से शब्द निःशब्द हो गए है| उन्होंने कहा कि हिंदी को गौरव दिलाने हेतु श्री अटल जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण दिया था| इस अवसर पर मॉरिशस के मार्गदर्शक मंत्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ ने अपने और अपने देश की ओर से अपने करीबी दोस्त और सहयोगी के निधन पर शोक व्यक्त किया और कहा कि श्री अटल जी ने दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंधों को अटल बंधन में बंधने का महत्वपूर्ण कार्य किया है| चीन से आये श्री जियांगचीग खेईना ने कहा कि मैं श्री अटल जी के रचनाओं का अनुवादक था और वे भारत और चीन के बीच मधुर संबंध बनाने के लिए प्रयत्नशील रहे। इस अवसर पर विश्व भर से आये विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों ने श्री अटल जी के व्यक्तित्व एवं रचनाओं को याद किया और उन्हें भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मॉरिशस के प्रधानमंत्री श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ ने मॉरिशस के साइबर टावर को श्री अटल जी को समर्पित किया और इसका नाम श्री अटल जी के नाम पर अटल टावर करने की घोषणा की| उन्होंने श्री वाजपेयी जी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि उनके देश ने अपने राष्ट्रीय झंडे और तिंरगे को आधा झुका दिया था और कहा कि सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक मॉरिशस में हमारा और भारतीय झंडा आधा झुका रहेगा। श्री अटल के सम्मान में पूर्व प्रस्तावित सांस्कृतिक कार्यक्रम को निरस्त कर दिया गया और उनके याद में एक कवि सम्मलेन का आयोजन किया गया जिसमें भारत के विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज समेत कई मशहूर कवियों ने काव्य पाठ किया|

पुस्तक प्रदर्शनी एवं स्टॉल :

विश्व हिंदी सम्मेलन के प्रवेश द्वार के दोनों ओर रंग विरंगी पुस्तकों से सुसज्जित स्टॉल हिंदी प्रेमी एवं आये हुए आगंतुकों के आकर्षण का केंद्र बने रहे | इन स्टॉलों में कई लेखकों ने अपनी पुस्तकों का विमोचन किया अथवा करवाया| यहाँ मॉरीशस और भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसे समृद्ध बनाने की दिशा में सलंग्न प्रमुख सरकारी संगठनों और हिंदी के प्रमुख प्रकाशकों की प्रवासी साहित्य और मॉरीशस के साहित्यकारों से संबंधित पुस्तकें प्रदर्शित थी जिसमे जनसमूह की लगातार भारी भीड़ बनी रही । हिंदी के शिक्षण में संलग्न महात्मा गांधी व रवीन्द्र नाथ संस्थान मॉरीशस का भाषा संसाधन केंद्र, विश्व हिंदी सचिवालय के स्टॉल, सीडैक (पुणे) का स्टाल, इंटरनेट पर हिंदी के प्रचार प्रसार में अग्रसर विकिपीडिया का स्टॉल, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के स्टॉल, साहित्य अकादमी के स्टॉल, पुस्तक संस्कृति के प्रसार में संलग्न नेशनल बुक ट्रस्ट के स्टॉल और माइक्रोसाफ्ट के स्टॉल प्रमुख हैं | इसके अतिरिक्त कला एवं संस्कृति मंत्रालय (मारीशस), हिंदी प्रचारिणी सभा (मारीशस), हरियाणा ग्रंथ अकादमी, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय नई दिल्ली , मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, केंद्रीय हिंदी संस्थान, डायमंड पाकेट बुक्स, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान,

प्रभात प्रकाशन, किताबघर प्रकाशन, रामपुर रजा लाइब्रेरी, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय सहित लगभग तीस से अधिक प्रदर्शनियां जनसमूह के आकर्षण का केंद्र बनी रही|

विभिन्न सामानांतर सत्र एवं अनुशंसायें:

भाषा एवं लोक-संस्कृति का अंतःसंबध – इस सत्र की अध्यक्षता गोवा की राज्यपाल माननीय श्रीमती मृदुला सिन्हा जी ने किया था| इस सत्र की मुख्य अनुसंशायें हैं

1. सांस्कृतिक अवध ग्राम की स्थापना की जाए ।
2. भारत और प्रवासी क्षेत्रों को सम्मिलित कर लोककथाओं तथा लोकगीतों का प्रकाशन किय जाए।
3. विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में लोक जीवन तथा लोक संस्कृति का समावेश किया जाए।
4. लोक जीवन, लोक साहित्य पर शोध परियोजनाओं में वरीयता एवं उन्हें प्रोत्साहन दिया जाए।
5. लोक भाषा के लिए कार्यरत संस्थाओं द्वारा लोक साहित्य एवं लोक संगीत, लोक जीवन के संवर्धन हेतु राष्ट्रीय स्तर पर कार्य योजनाएँ बनाई जाएँ ।

ख . **प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का विकास** - इस सत्र की अध्यक्षता माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री किरेन रिजीजू जी ने किया था और इसकी मुख्य अनुशंसाएँ हैं

1. हिंदी शिक्षा को समाज के प्रत्येक स्तर पर लागू किया जाए।
2. यूनिकोड स्क्रिप्ट सर्चेबल किया जाए।
3. बैंकिंग सेक्टर में यूनिकोड का प्रचार-प्रसार किया जाए।
4. बीमा, अंग्रेज़ी में प्राप्त आई. टी. सॉल्यूशन को हिंदी में किया जाए।
5. सभी निजी एवं सरकारी ऑनलाइन सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध की जाएँ।
6. भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार हेतु सभी वेबसाइट्स द्विभाषी (अंग्रेजी और हिंदी) स्वरूप में किए जाएँ।
7. यूनिकोड का मानकीकरण किया जाए।

ग. **हिंदी शिक्षण में भारतीय संस्कृति** - इस सत्र की अध्यक्षता मॉरिशस के श्री उदय नारायण गंगू जी ने किया था और इसकी मुख्य अनुसंशायें रही

1. हिंदी के विदेशी विद्यार्थियों को आरंभ में भारतीय संस्कृति का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाना चाहिए।
2. भाषा शिक्षण में गीत, नाटक और फ़िल्मों का उपयोग किया जाए।
3. अध्यापकों के लिए भाषा शिक्षण के प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।
4. बच्चों की कविताओं के माध्यम से भी संस्कृति का ज्ञान कराना चाहिए।

घ. **हिंदी साहित्य में संस्कृति चिंतन** - इस सत्र की अध्यक्षता मॉरिशस के डॉ. राजरानी गोबिन जी ने किया और इसकी मुख्य अनुसंशायें रही

1. साहित्य और संस्कृति के संबंध को मज़बूत बनाया जाए।
2. नयी पीढ़ी को सांस्कृतिक दृष्टि से जागरूक बनाया जाए।
3. भारतीय संस्कृति पर हो रहे विपरीत प्रभावों पर रोक लगाने का उपक्रम किया जाए।
4. प्रौद्योगिकी का उपयोग कर संस्कृति की वैज्ञानिक व्याख्या को प्रोत्साहन दिया जाए।

ङ. **फ़िल्मों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का संरक्षण** – इस सत्र की अध्यक्षता जाने माने फिल्मकार एवं गीतकार श्री प्रसून जोशी जी ने किया और इसकी मुख्य अनुसंशायें रही –

1. फ़िल्मों के माध्यम से संस्कृति के संरक्षण के लिए चर्चा -परिचर्चा का आयोजन किया जाना चाहिए।
2. ग्रामीण पृष्ठभूमि से आए फ़िल्मकारों को फ़िल्म-निर्माण में मदद दी जानी चाहिए।
3. सिनेमा में प्रतिपादित सामाजिक सोच का दिशा-निर्धारण किए जाने के प्रयास किए जाने चाहिए।
4. वेब सीरीज़ में आ रही विषयवस्तु पर नियंत्रण रखे जाने की ज़रूरत है।
5. कलात्मक फ़िल्मों को बढ़ावा दिया जाय।
6. हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए देवनागरी लिपि ही स्वीकार की जाए।

च. **संचार माध्यम और भारतीय संस्कृति** - इस सत्र की अध्यक्षता मॉरिशस के श्री सत्यदेव टेंगर जी ने किया और इसकी मुख्य अनुसंशायें रही

1. नव माध्यम को 'सोशल मीडिया' के स्थान पर नया हिंदी नाम दिया जाए।
2. भारतीय जनमाध्यमों को विदेशों, विशेष रूप से प्रवासी भारतीय बहुल क्षेत्रों के जनमाध्यमों से प्रसारण सामग्री की प्राप्ति तथा आदान-प्रदान हेतु कार्य योजना तैयार की जाए।
3. भारत में किसी उपयुक्त स्थान पर भारतरत्न 'अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी पत्रकारिता केंद्रीय विश्वविद्यालय' की स्थापना की जाए।
4. 'व्हाट्स एप' जैसे नवाचारी डिजिटल प्लेटफ़ार्मों का सांस्कृतिक पत्रिका के रूप में उपयोग किया जाए।
5. मीडिया तथा जनसंचार शिक्षण में 'भारतीय संस्कृति' विषय को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।

छ. **प्रवासी संसार : भाषा और संस्कृति** – इस सत्र के अध्यक्षता मशहूर साहित्यकार डॉ. कमल किशोर गोयनका जी ने किया और इसकी मुख्य अनुसंशाएं रही

1. प्रवासी बहुल देशों में भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन हेतु प्राथमिकता के साथ प्रयास किये जाएँ।

2. प्रवासी भारतीयों के बीच युवा पीढ़ी की ज़रूरतों के अनुरूप हिंदी के प्रचार-प्रसार की योजना बनायी जाए तथा उसे क्रियान्वित किया जाए।

3. हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण में प्रवासी दृष्टिकोण को अपनाया जाए। भारतवंशी छात्रों के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम विकसित किया जाए।

4. 'क्रियोल' में सृजित हो रहे साहित्य को हिंदी में अनुवादित किया जाए।

5. भारतीय संस्कृति एवं भाषा को युवा पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए गैर-सरकारी परंतु प्रामाणिक प्रयासों को वित्तीय सहायता दी जाए।

6. गोस्वामी तुलसीदास के नाम पर एक 'सांस्कृतिक ग्राम' स्थापित किया जाए।

ज. **हिंदी बाल साहित्य और संस्कृति** - इस सत्र के अध्यक्षता श्री कृष्ण कुमार अस्थाना जी ने किया और इसकी मुख्य अनुसंशायें रही

1. मॉरीशस के बाल साहित्य के प्रकाशन की व्यवस्था की जाए।

2. साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में बाल साहित्य का एक कॉलम अनिवार्यत: रखा जाना चाहिए।

3. प्रतिवर्ष, बाल साहित्य पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की जाए।

4. विभिन्न देशों में शिक्षकों का आदान-प्रदान किया जाए।

5. हिंदी बाल साहित्य का तथ्यात्मक इतिहास लिखा जाए।

6. बाल साहित्य अकादमी स्थापित की जाए।

समापन समारोह :

11 वे विश्व हिंदी सम्मलेन के समापन समारोह के मुख्य अतिथि मॉरिशस के कार्यवाहक राष्ट्रपति माननीय श्री परमशिवम पिल्लै वयापुरी थे| समापन समारोह के दौरान मंच पर भारत सरकार के विदेश मंत्री माननीय श्रीमती सुषमा स्वराज, मॉरिशस सरकार के मार्ग दर्शक मंत्री माननीय श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ, मॉरिशस सरकार के शिक्षा मंत्री माननीय श्रीमती लीला देवी दूकन लछुमन, गोवा के राज्यपाल माननीय श्रीमती मृदुला सिन्हा, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल माननीय श्री केसरी नाथ त्रिपाठी, भारत सरकार के विदेश राज्यमंत्री माननीय श्री एम. जे. अकबर, भारत सरकार के मानव संसाधन राज्यमंत्री माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह मंच पर उपस्थित थे | अपने संबोधन वक्तव्य में मुख्य अतिथि श्री वयापुरी ने कहा कि हिंदी सम्मेलन में भाग लेना उनके लिए अत्यंत गर्व और प्रसन्नता की बात है तथा श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को याद करते हुए कहा कि अटल जी मॉरीशस के अच्छे और सहयोगी मित्र के रूप में सदा स्मरणीय रहेंगे। संख्याबल और हिंदी वैश्विक लोकप्रियता के आधार पर हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाए जाने की माँग दोहराई और इसे भारत के राष्ट्रीय पक्षी मोर के समान सुन्दर और पवित्र भाषा बताया| उन्होंने आशा व्यक्त की कि सम्मेलन अपने सभी उद्देश्यों की पूरा करेगा और हिंदी मॉरिशस के पक्षी डोडो के तरह मॉरिशस से लुप्त नहीं होगा क्योंकि महात्मा गांधी संस्थान मॉरीशस में हिंदी का अध्ययन -अध्यापन निरन्तर चल रहा है। उन्होंने कहा कि मॉरीशस ने

अभिमन्यु अनत, सोमदत्त बखोरी और चिन्तामणि जैसे विश्व स्तरीय हिंदी लेखक दिए हैं। उन्होंने विश्व भर से पधारे प्रतिभागियों की हज़ारों की संख्या में उपस्थिति के लिए धन्यवाद व्यक्त किया और 11 वें विश्व हिंदी सम्मलेन के समाप्ति के घोषणा की| इस अवसर पर देश और विदेश के कई कर्मठ हिंदी कर्मियों को विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया | कार्यक्रम का समापन भारत सरकार के विदेश राज्यमंत्री माननीय श्री एम. जे. अकबर के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ | उन्होंने सुषमा स्वराज जी के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि वे सम्मेलन को कल्पना से मूर्त रूप तक ले आई और इस बात कि भी याद दिलाई कि इतिहास खामोशी से बदलता है और इसी प्रक्रिया में आज हिंदी विश्व भाषा बन चुकी है और यह अनेक देशों में साहित्य, भाषा, संस्कृति, मनोरंजन आदि के रूप में उपस्थिति दर्ज कर चुकी है।

फोटो 3 : समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

सम्पूर्ण समरोह के दौरान मॉरिशस सरकार ने बहुत ही अच्छी व्यवस्था कर रखी थी और आगंतुक हिंदी प्रेमियों को स्वागत एवं देखभाल में कोई कमी नहीं रखी| इस सम्मलेन के लिए नामित एवं भाग लेने हेतु आर्थिक सहयोग हेतू निदेशक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ| 11 वें विश्व हिंदी सम्मलेन में भाग लेना एवं कई गणमान्य साहित्यकार, हिंदी प्रेमी एवं हिंदी से जुड़े विभिन्न देशों से आये प्रतिनिधिमंडल से संवाद, एक अतुलनीय अनुभव रहा| मैं इसके लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर, 11 वें विश्व हिंदी सम्मलेन के आयोजकों एवं मॉरिशस सरकार के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ|

डॉ. राज कुमार सिंह
प्राध्यापक प्रभारी (राजभाषा)
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
भुवनेश्वर

ज्यामिति

मैं केंद्र में,
जड़वत खड़ा होता हूँ....!
समर्पण के सम्बन्ध के,
एक सिरे को पकड़े हुए.....!
जिसका दूसरा सिरा,
पकड़...!
तुम चलती हो,
पूरी परिधि पर...!
तभी तो पाती हो तुम,
अपना इच्छित,
पूर्ण विस्थापन..!
ये समर्पण की त्रिज्या,
कभी अतीत,
तो कभी भविष्य में,
बढ़ कर व्यास हो जाती है...!
केंद्र में, मुझ पर,
भविष्यगत शंकाओं का.
जब कभी,

एक लम्ब, अवतरित होता है..!
तो समेट लेता है तुम्हें भी...!
आच्छादित,
अस्तित्व हमारे,
शंकु बन जाते हैं...!
न होता वृत्त यदि आधार..!
तुम्हारे प्रेम और विश्वास का,
तो यह शंकु....
अपने ही,
शीर्ष पर टिका होता....!
हाँ.....तब भी
विस्थापन तो होता ही....!

परंतु तब,
केंद्र में एक नुकीला,
सिरा होता...!!!
जो हमारी
सारी ज्यामिति पर
खूंटे सा गड़ा होता..!!!

गौरव यादव
वैज्ञानिक-C/संग्रहालय प्रमुख
क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय
आचार्य विहार, भुवनेश्वर

सम्पूर्ण हूँ मैं

भूख नहीं है, प्रेम पाश है तुम्हारा,
जो हर दोपहर, कढ़ी की सोंधी खुशबू बन,
खींच लेता है मुझे घर की ओर,
मैं सम्मोहित सा, खींचा आता हूँ..!!!

माया हो कर खुद भी,
तुमने जन्मी है एक और माया,
मैं विरक्त रह भी कैसे पाता,
तो अब माया पाश में बंधा हूँ तुम्हारे...!!

अनमना था, निष्पक्ष था मैं,
पर प्रेम इतना भारी होगा
ये पता न था...!

झुक गया अस्तित्व पूरा
तुम्हारी ओर, और तब मैंने जाना
संन्यास भी निरर्थक है....!

कदाचित ये विचित्र है,
कि माया के आसक्त मैं,
प्रवाह में बहता हूँ....!!
तुम्हारे प्रभाव में रहता हूँ.....!!

ये संयोग सुखद है,
कदाचित, मेरा इच्छित है....!!
अब और कोई आकांक्षा नही
तो अब **सम्पूर्ण हूँ मैं**...!!

गौरव यादव
वैज्ञानिक-C/संग्रहालय प्रमुख
क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय

हाइकु

छोटा-सा मन
फूल जैसा कोमल
आशा से भरा।

भारत प्यारा
है सबसे सुन्दर
देश हमारा।

यह ज़िन्दगी
छोटा-सा फूल और
कोमल पत्ता।

प्रकृति रानी
हरियाली से भरी
एक कहानी।

फूल ही तो थी
गई तो गई फिर
लौटकर न आई।

ज्योति प्रकाश राउत
ग्यारहवीं
जवाहर नवोदय विद्यालय
खुरूगंज, खोरधा

हाइकु मूल रूप से जापानी कविता है, जो तीन पंक्तियों में लिखी जाती है।

निर्धन की तरूणी

हुसन को अवगत करादो कि ढूँढे कोई और द्वार

मैं निर्धन की तरूणी हूँ मुझे अवकाश नहीं है

बालपन से कठिनाइयों के अंचल में पली-बढ़ी मैं

राशन कार्ड, मध्याह्न भोजन या बने योजना खाद्य सुरक्षा की

राशन डीपू, पानी के नल, कुएं की पक्की सखी हूँ मैं

चूलहे चौके के धूएं में प्रतिपल आँखें अंधी कराती रही हूँ मैं

वे करें मोलभाव ख्वाबों से जिनकी आँखों पर है परत सोने की

मैं अभावों का किस्सा हूँ मुझे अवकाश नहीं है

रोशनी की आस में जिंदगी के पालने में

साँसों की डोरी पर सुबह शाम रेंगती रहती हूँ मैं

मान लिया मैने कि मैं मानव का मन लिए हूँ

पर देह रुपी दीवार पर तस्वीर सी जवानी लिए हूँ

पेट की आग बुझाऊं या रचाऊँ रासलीला

मानव हूँ किंतु देवताओं से कठिन जीवन जीती हूँ

भँवरों-तितलियों के लिए उद्यान-भोज है करने को व्यापार प्यार का

मैं उपासना की दीवानी हूँ मुझे अवकाश नहीं है

जीवनयापन कर रही हूँ क्योंकि मैं जगतजननी का खिताब लिए हूँ

मानव की प्रगतिरोधक प्रत्येक आफत से भिड़ी हूँ मैं

मैं वक्त के पन्नों पर परिश्रम के किस्से लिख रही हूँ

निद्रा का सोमरस न फुहारो मैं इम्तिहान का समय हूँ

है जिनके पास समय फंसें वे रुपजाल के भँवर में

मैं श्रम की दीवानी हूँ मुझे अवकाश नहीं है

जिंदगानी आखिर कब तक सब्र का इम्तिहान लेगी

घुटन जितनी ही बढ़ेगी आग उतनी ही फैलेगी

भूख क्या होती है यह निर्धन ही जानते हैं

सूखे से दो-चार होकर घर संसार त्यागते हैं

तुफानो को करना आमंत्रित दर्द वाले जानते हैं

परंपराओं की राख कब तक आग के सर चढ़ेगी

शौक हो जिन्हें जिएं परछाईयों की आड़ में

मैं रोशनी का प्रतीक हूँ मुझे अवकाश नहीं है

(सुकान्ति कुमारी पंडा)

हिन्दी अनुवादक, ग्रेड-II ,

क.भ.नि.सं., क्षेत्रीय कार्यालय,

भुवनेश्वर

दो सुमन समर्पित करता हूँ

दो सुमन समर्पित करता हूँ, अपना मन अर्पित करता हूँ।

मां सरस्वती चरणों में तेरे , यह जीवन अर्पित करता हूँ।

तेरी कृपा से ज्ञान-देवी,

मूर्ख भी ज्ञानी बनता है।

दया-दृष्टि पड़े जिस पर,

सब की हैरानी बनता है।

तेरी भक्ति के बीज मैया, मैं खुद में विकसित करता हूँ।

दो सुमन समर्पित करता हूँ, अपना मन अर्पित करता हूँ।।

अब तक जीया हूँ मैया,

मैं जग की ठोकर खा-खाकर।

बिन ज्ञान, नहीं सम्मान मिला,

मैं देख चुका दर जा-जाकर।

अंत शरण में तेरी मैया, मैं स्वयं को शरणित करता हूँ।

दो सुमन समर्पित करता हूँ, अपना मन अर्पित करता हूँ।

है ज्ञान-सूर्य अंबा मेरी,

मुझमें ज्ञान-दीप जला दो तुम।

अंधकार जितना मुझ में,

उसको तो दूर भगा दो तुम।

मन की बात बता तुझको, मैं मन को हर्षित करता हूँ।

दो सुमन समर्पित करता हूँ, अपना मन अर्पित करता हूँ।

मां सरस्वती चरणों में तेरे,

यह जीवन अर्पित करता हूँ।।

यह जीवन अर्पित करता हूँ।।।

घनश्याम

परास्नातक शिक्षक (हिंदी)

के.वी. क्रमांक—4, भुवनेश्वर

जय हिंद, जय हिंदी

सारी भाषाओं में है **चमकीली हिंदी,**

यह है हमारी **राजभाषा हिंदी।**

बोलने में **सहज**, सुनने में **मधुर** है ये हिंदी,

समझने में **सरल** है ये हिंदी।

भारत देश की **राष्ट्रभाषा है हिंदी**।

हम सब का **गौरव है ये हिंदी,**

अन्य सब **भाषाओं के आगे** है ये हिंदी।

सब बोली व लिखी जाने वाली भाषाओं में

शाश्वत है ये हिंदी।

भारत के **कण-कण में छा गई है** ये हिंदी,

हम **भारतीयों की पहचान** है ये हिंदी,

सभी भाषाओं की एक माला में

पदक है हिंदी।

सब भारतीय भाषाओं को **एक साथ जोड़ती है हिंदी।**

आओ हम सब मिलकर **हिंदी की मधुर बोली** बोलें।

हिंदी को विश्व-दरबार में,

अभिनंदित करें

और बोलें

जय हिंद, जय हिंदी।

जय हिंद, जय हिंदी।।

- श्रीमती स्नेहसुता षडंगी

(प्राचार्या)

केवि क्रमांक - 4

हिंदी कंप्यूटिंग एवं कार्यालीन कार्य अनुप्रयोग "पर एक कार्यशाला (दिनांक: 08/11/2018)

मुख्या वक्ता— श्री राजीव कुमार रावत,

वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, भा.प्रौ. सं.

खरगपुर

हिन्दी-कार्य को लेकर आने वाली कठिनाइयों, नियमों को विस्तार से समझाने एवं ऑनलाइन

मुख्या वक्ता— श्री निर्मल कुमार दुबे,
उपनिदेशक, राजभाषा क्षेत्रीय
कार्यान्वयन कार्यालय, कोलकाता

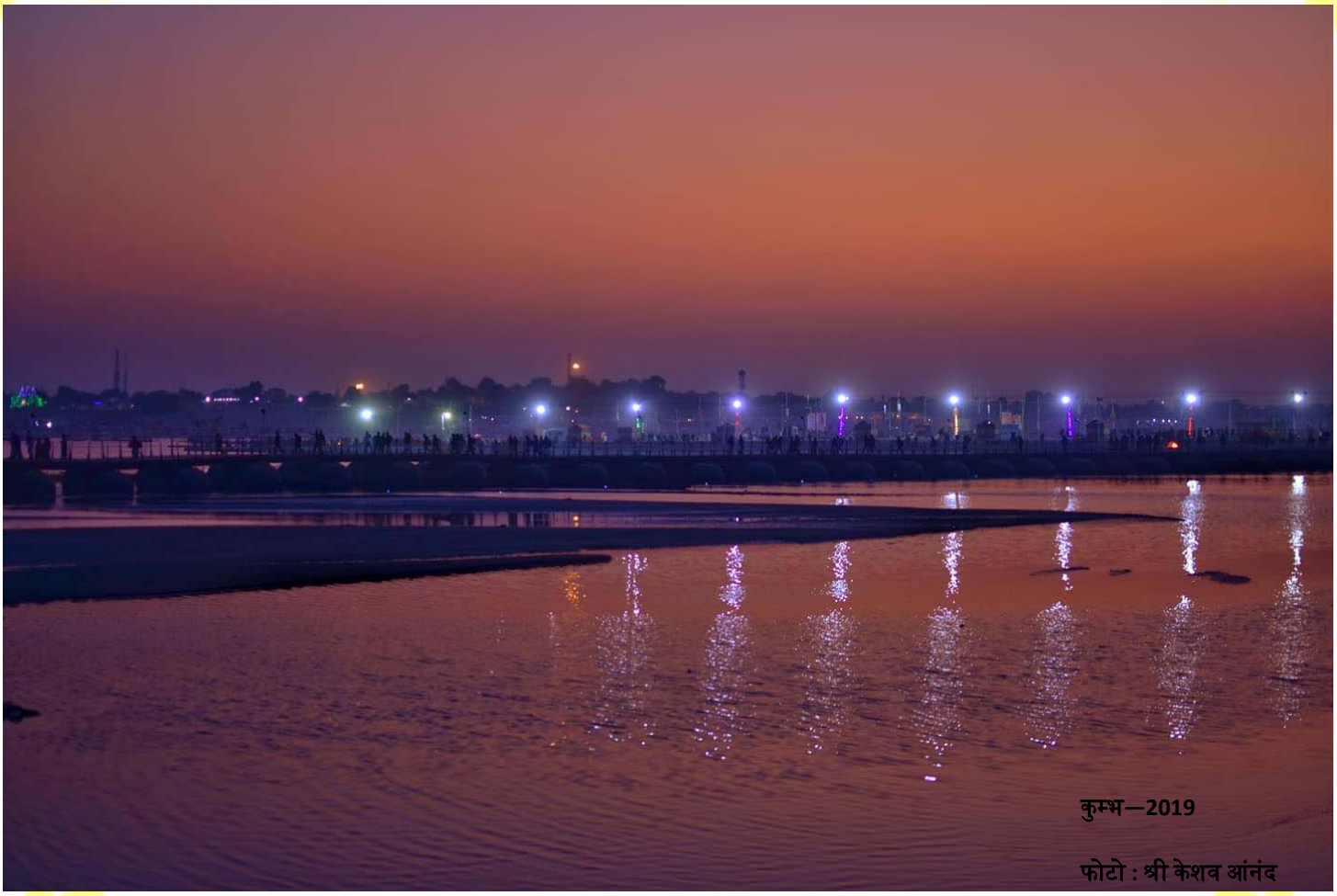

कुम्भ—2019

फोटो : श्री केशव आंनद